INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

HANDWRITTEN NOTES

बिहार उपनिरीक्षक

BIHAR POLICE SUBORDINATE SERVICES COMMISSION

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु

भाग-2 भारत एवं बिहार का इतिहास

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

बिहार उपनिरीक्षक (SI)

BIHAR POLICE SUBORDINATE SERVICES COMMISSION

भाग – 2

भारत एवं बिहार का इतिहास

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**बिहार पुलिस उपनिरीक्षक (SI)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **BIHAR POLICE SUBORDINATE SERVICES COMMISSION (BPSSC)"** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**बिहार पुलिस उपनिरीक्षक (SI)**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें* **/**

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/paxqem

Online Order करें - https://shorturl.at/hitzF

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

	भारत का इतिहास	
क्र. सं.	अध्याय	पेज नंबर
1.	हड़प्पा सभ्यता (सिंधु घाटी सभ्यता)	1
2.	वैदिक काल	6
3.	धार्मिक आंदोलन • बौद्ध धर्म • जैन धर्म • शैव धर्म	12
4.	प्राचीन भारत के राजवंश • मौर्य वंश • कुषाण वंश • सातवाहन राजवंश • गुप्त वंश • चालुक्य वंश • चालुक्य वंश • पल्लव राजवंश • चोल राजवंश	17
5.	प्राचीन भारत में कला एवं वास्तु • सिन्धु घाटी सभ्यता से ब्रिटिश काल तक की कलाएं • भारत के प्रमुख शास्त्रीय नृत्य नर्तक । • भारत के प्रमुख लोकनृत्य • प्रसिद्ध वाद्य यंत्र एवं वादक	43

	मध्यकालीन भारत	
1.	अरब आक्रमण	59
2.	दिल्ली सल्तनत काल • गुलाम वंश • खिलजी वंश • तुगलक वंश • सैयद वंश • लोदी वंश • बहमनी एवं विजयनगर साम्राज्य • विजयनगर की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ	61
3.	मुग़ल काल	75
4.	मध्यकाल में कला एवं वास्तु	80
5.	भक्ति तथा सूफी आंदोलन	84
	आधुनिक भारत का इतिहास	
1.	यूरोपीय कम्पनियों का आगमन • मराठा साम्राज्य	89
2.	भारत में गवर्नर जनरल वायसराय एवं उनके कार्य	104
3.	राष्ट्रवाद का उदय • 1857 की क्रांति से पूर्व के विद्रोह	110

	• 1857 ई. की क्रांति • भारत में पश्चिमी शिक्षा का उदय • 19वीं तथा 20वीं शताब्दी के दौरान सामाजिक -धार्मिक सुधार आंदोलन : विभिन्न नेता एवं संस्थाएँ	
4.	स्वतंत्रता संघर्ष एवं भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन	133
5.	एकीकरण और पुनर्गठन	158
	बिहार का इतिहास	
1.	बिहार : एक परिचय	162
2.	प्राचीनकालीन बिहार • बिहार के इतिहास के अध्ययन संबंधी स्रोत • बिहार का आर्यीकरण और राज्य का निर्माण • हर्यक वंश • नन्द वंश • मौर्य साम्राज्य मौर्योत्तर बिहार ○ शुंग वंश ○ कण्व वंश ○ गुप्तकाल	163

3.	पूर्व मध्यकालीन बिहार • पाल वंश • मिथिला में कर्णाट वंश • बिहार में तुर्क शासन • सूरवंश • मुगल साम्राज्य - 1555-56 • जनजातीय का उदय • बिहार में यूरोपीय व्यापारी वर्ग का प्रादुर्भाव	179
4.	आधुनिक बिहार • ब्रिटिश शासन के प्रति विद्रोह • बक्सर युद्ध • बहावी आन्दोलन • जनजातीय विद्रोह • 1857 के विद्रोह में बिहार का योगदान • बिहार और राष्ट्रीय आन्दोलन • बिहार प्रान्त की अलग माँग एवं पृथक राज्य का गठन • बिहार में क्रांतिकारी आतंकवाद • बिहार में होमरूल आन्दोलन-1916 • बिहार में किसान और मजदूर आन्दोलन • अन्य संगठन • द्वैध तथा संवैधानिक प्रगति • महिलाओं का योगदान • भारत छोड़ो आंदोलन में बिहार का निर्णायक योगदान : • स्वतंत्रता का उदय	194

5. वत्स

- राजधानी कौशाम्बी
- कौशाम्बी यमुना के किनारे

6. कुरु

- राजधानी इन्द्रप्रस्थ
- हस्तिनापुर इसी में

7. पांचाल

- गंगा नदी से दो भागों में बाँटती है ।
  उ. पांचाल- अहिच्छत्र (राजधानी)
  द.पांचाल-काम्पिल्य (राजधानी)
  कन्नौज इसी का भाग

8. मत्स्य जनपद

अलवर-भरतपुर जयपुर क्षेत्र
राजधानी विराटनगर

9. सूरसेन

राजधानी मथुरा

10. अवन्ति

- दो भागों में विभाजित
  उत्तरी भाग की राजधानी - उज्जैन
  दक्षिण भाग की राजधानी – महिष्मती

11. वज्जि

यह आठ राज्यों का एक संघ था।
इसकी राजधानी वैशाली थी ।

12. मल्ल दो भाग- कुशीनारा कुशावती
पावा

13. गान्धार

- पेशावर व राउलपिण्डी वाला क्षेत्र
- राजधानी तक्षशिला – शिक्षा व व्यापार का प्रमुख केन्द्र

14. कम्बोज

- राजधानी हाटक / राजपुरा

15. अश्मक

- राजधानी पोतन / पोटिल
  गोदावरी के तट पर

16. मगध

- पटना गया शाहबाद वाला क्षेत्र
- राजधानी राजगीर
- वेदों में नाम व्रात्य
- मगध का संस्थापक वृहद्रथ
- वास्तविक संस्थापक - बिम्बिसार

दो राजधानियों वाले महाजनपद
कौशल
अवन्ति
पांचाल

- **गान्धार व कम्बोज से गुजरने वाला पथ उन्तरापथ कहलाता था।**

अध्याय – 3

धार्मिक आंदोलन

- **नये धार्मिक विचार-**
  जैन व बौद्ध धर्म
  उदय के कारण→
- छठी शताब्दी ई.पू. में वैदिक संस्कृति कर्मकाण्डों व आडम्बरों से ग्रसित हो गई।
- परिणाम सामाजिक कुरीतियां
- समाज में ऊँच-नीच जात-पात का भेदभाव बढ़ने लगा।
- जनता में असंतोष बढ़ा ।
- **मध्य गंगा घाटी में** इसी समय 62 सम्प्रदायों का उदय हुआ । उनमें **जैन और बौद्ध** सम्प्रदाय प्रमुख थे ।

❖ बौद्ध धर्म

- बौद्ध धर्म के **संस्थापक गौतम बुद्ध थे** ।
  सिद्धार्थ-बचपन का नाम - सिद्धि प्राप्त करने के लिए जन्म लेने वाला ।
- जन्म 563 ई.पू. - लुम्बिनी (नेपाल)
- कुल- शाक्य (क्षत्रिय कुल)
- बुद्ध की माता – महामाया
- बुद्ध की माता की मृत्यु के बाद पालन पोषण महाप्रजापति गौतमी ने किया था ।
- पिता – शुद्धोधन
- बुद्ध का विवाह - यशोधरा से
- बुद्ध के पुत्र का नाम राहुल था ।

महाभिनिष्क्रमण

- 29 वर्ष की आयु में
- सांसारिक जीवन का त्याग कर दिया था ।
- अनोमा नदी के तट पर सिर मुण्डन
- काषाय वस्त्र धारण किये ।
- प्रथम गुरु आलार कलाम थे ।
- सांख्य दर्शन के आचार्य
- बाद में उरुवेला (बोधगया) प्रस्थान
- यहाँ पांच साधक मिले ।
- इनमें कौण्डिय प्रमुख थे ।

ज्ञान प्राप्ति –

- 35 वर्ष की आयु में – बोधगया में ज्ञान की प्राप्ति हुई ।
- **वैशाख पूर्णिमा को पीपल के वृक्ष के नीचे निरंजना नदी (पुनपुन) के तट पर ज्ञान की प्राप्ति हुई ।**
- इसी दिन से **गौतम बुद्ध तथागत** कहलाये तथा गौतम बुद्ध नाम भी यहीं से हुआ।

जिसने सत्य को प्राप्त कर लिया।

धर्मचक्र प्रवर्तन- सारनाथ में

- बोधगया से सारनाथ आये
- प्रथम उपदेश दिया-5 ब्राह्मण सन्यासियों को मागधी भाषा में ।
- गौतम बुद्ध का बौद्ध संघ में प्रवेश हुआ ।
- सर्वप्रथम अनुयायी –
  तपस्स जाट शुद्र
  कालिक
- प्रिय शिष्य - आनन्द

बौद्ध धर्म की प्रथम महिला भिक्षु - गौतमी (बुद्ध की मौसी)

अन्तिम उपदेश

- **कुशीनारा में** सुभच्छ को दिया
- हिरण्यवती नदी तट पर

महापरिनिर्वाण (मृत्यु)

- कुशीनारा में 483 ई.पू.
- 80 वर्ष की आयु में
- बुद्ध के अवशेष **8 भागों में** डाले गये जहां स्तूप बनाये गये।

वैशाख पूर्णिमा का महत्व

- वैशाख पूर्णिमा को **बुद्ध पूर्णिमा** भी कहते हैं ।
- गौतम बुद्ध का जन्म, ज्ञान प्राप्ति
- महापरिनिर्वाण - वैशाख पूर्णिमा को
  अपवाद-महाभिनिष्क्रमण
- गौतम बुद्ध में 32 महापुरुषों के लक्षण बताये गये हैं

बुद्ध के प्रमुख वचन

- जीवन कष्टों से भरा है।
- लिप्सा तृष्णा का ही दूसरा रूप है।

बौद्ध धर्म के त्रिरत्न

- **बुद्ध, धम्म, संघ**

बुद्ध के चार आर्य सत्य

1. दुख
2. दुख समुदाय
3. दुख निरोध (निवारण)
4. प्रतिपदा

- इन्हीं का कालान्तर में विस्तार होकर ये **अष्टांगिक मार्ग कहलाये।**
- भिक्षुओं का कल्याण मित्र

अष्टांगिक मार्ग

1. सम्यक दृष्टि
2. सम्यक संकल्प
3. सम्यक वाणी
4. सम्यक कर्मान्त
5. सम्यक आजीव
6. सम्यक व्यायाम
7. सम्यक स्मृति
8. सम्यक समाधि

- समाधि मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य निर्वाण प्राप्ति ।
- जीवन-मरण चक्र से मुक्ति

बौद्ध धर्म

- अनीश्वरवादी
- पुनर्जन्म में विश्वास
- अनात्मवादी धर्म

बौद्ध धर्म के प्रतीक

जन्म	-	कमल व साण्ड
गृहत्याग	-	घोड़ा
ज्ञान	-	पीपल
निर्वाण	-	पदचिन्ह
मृत्यु	-	स्तूप

- बौद्ध धर्म का सर्वाधिक विस्तार कोशल राज्य में ।
- **बौद्ध धर्म के सर्वाधिक उपदेश श्रावस्ती में दिये गये।**
- बौद्ध धर्म के प्रचार केन्द्र - मगध

बौद्ध संगीतियां

1. 483 ई.पू. - संरक्षक शासनकाल में अजातशत्रु के राजगृह में रचना रची गयी ।

सुत्तपिटक (बुद्ध के उपदेश) विनयपिटक (संघ के नियम)

अध्यक्ष – महाकस्सप

2. 383 ई.पू.

संरक्षक - कालाशोक

वैशाली में - भिक्षुओं में मतभेद

अध्यक्ष – सर्वकामिनी

3. 250 / 251 ई.पू. संरक्षक शासनकाल में - अशोक पाटलिपुत्र में रचना रची गयी।

अभिधम्मपिटक (बुद्ध के दार्शनिक विचार)

अध्यक्ष –मोग्गलिपुत्त तिस्स

4. प्रथम शताब्दी संरक्षक - कनिष्क

कुण्डलवन में (कश्मीर) हीनयान व महायान (सम्प्रदाय में बंटा)

अध्यक्ष – वसुमित्र

- विहार - बौद्ध भिक्षुओं का निवास स्थान
- चैत्य - पूजास्थल

बौद्ध धर्म को अपनाने वाले प्रमुख शासक

- बिम्बिसार - बुद्ध का मित्र
- प्रसेनजीत
- उदायिन
- अशोक – महेन्द्र (पुत्र), संघमित्रा(पुत्री)
- बौद्ध धर्म का प्रचार करने श्रीलंका गये।

नालन्दा विश्वविद्यालय

- **गुप्त शासक कुमारगुप्त ने बौद्ध धर्म की शिक्षा के लिए स्थापित किया।**
- बौद्ध धर्म का अध्ययन करने हेतु आये ।
- फाह्यान, ह्वेनसांग (चीनी यात्री) ।
- अजातशत्रु प्रारम्भ में जैनधर्म का अनुयायी था बाद में बौद्ध धर्म का अनुयायी बना ।

बौद्ध धर्म की प्रमुख महिला अनुयायी

- गौतमी
- नंदा
- मल्लिका
- खेमा
- विशाखा
- यशोधरा
- आम्रपाली
- सुप्रवासा

बौद्ध धर्म के प्रतीक महात्मा बुद्ध के प्रमुख आठ स्थान

- लुम्बिनी
- बोधगया
- सारनाथ
- कुशीनगर
- वैशाली
- राजगृह
- श्रावस्ती
- संकाश्य
- बौद्ध धर्म के महायान सम्प्रदाय का आदर्श बोधिसत्व है । बोधिसत्व दूसरे के कल्याण को प्राथमिकता देते हुए अपने निर्वाण में विलंभ करते है ।
- हीनयान का आदर्श अर्हत पद को प्राप्त करना है । जो व्यक्ति अपनी साधना से निर्वाण की प्राप्ति करते है उन्हें ही अर्हत कहा जाता है ।
- बौद्ध धर्म के बारे में हमें विशद ज्ञान त्रिपिटक (विनयपिटक, सुत्रपिटक, अभिधम्भपिटक से प्राप्त होता है । इन तीनों पिटकों की भाषा पाली है ।
- पालि पिटक सबसे पुराना है ।
- बुद्ध के जन्म एवं मृत्यु की तिथि को चीनी परम्परा के कैंटोन अभिलेख के आधार पर निश्चित किया गया है ।
- पालि त्रिपिटकों को पहली शताब्दी ईसा पूर्व में श्रीलंका के शासक वत्तगामिनी की देख-रेख में पहली बार लिपिबद्ध किया गया ।
- सूत्रपिटक के पांच निकाय हैं –दीर्घ, मज्झिम, संयुक्त, अगुंत्तर, खुद्दक,।
- बुद्ध के पूर्व जन्मों से जुड़ी जातक कथाएँ खुद्दक निकाय की 15 पुस्तकों में से एक है । खुद्दक निकाय में धम्मपद (नैतिक उपदेशों का पद्यात्मक संकलन थेरगाथा (बौद्ध भिक्षुओं का गीत) और थेरीगाथा (बौद्ध भिक्षुणियों के गीत)है ।
- बौद्धधर्म मूलतः अनीश्वरवादी है । इसमें आत्मा की परिकल्पना भी नहीं है ।
- तृष्णा के क्षीण हो जाने की अवस्था को ही बुद्ध ने निर्वाण कहा है ।
- विश्व दुखों से भरा है का सिद्धांत बुद्ध ने उपनिषद से लिया ।
- उपासकः गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए बौद्ध धर्म को अपनाने वालों को उपासक कहा गया है ।
- बौद्धसंघ में सम्मिलित होने के लिए न्यूनतम आयु सीमा 15 वर्ष थी । बौद्ध संघ में प्रविष्ट होने वाले को उपसम्पदा कहा जाता था ।
- सर्वाधिक बुद्ध मूर्तियों का निर्माण गंधार शैली के अंतर्गत किया गया लेकिन बुद्ध की प्रथम मूर्ति संभवतः मथुरा कला के अंतर्गत बनी थी ।
- भारत में उपासना की जाने वाली प्रथम मूर्ति संभवतः बुद्ध की थी ।

भारत के महत्त्वपूर्ण बौद्ध मठ

मठ	स्थान	राज्य केन्द्र शासित प्रदेश
टाबो मठ/ ताबो मठ	तबो गाँव लाहौल (स्पीति घाटी)	हिमाचल प्रदेश
नामग्याल मठ	धर्मशाला	हिमाचल प्रदेश
हेमिस मठ	लद्दाख	जम्मू कश्मीर
थिकसे मठ	लद्दाख	जम्मू कश्मीर
शासुर मठ	लाहुल स्पीति	हिमाचल प्रदेश
माइंड्रोलिंग मठ	देहरादून	उतराखंड
रुमटेक मठ	गंगटोक	सिक्किम
तवांग मठ	अरुणाचल प्रदेश	अरुणाचल प्रदेश
नामड्रालिंग मठ	मैसूर	कर्नाटक
बोधिमडा मठ	बोधगया	बिहार

बौद्ध संगीति

क्रम-	समय	स्थान	अध्यक्ष	तत्कालीन शासक	कार्य/निर्णय/विशेषता

- **कुषाण वंश**

- मौर्योत्तरकालीन विदेशी आक्रमणकारियों में कुषाण वंश सबसे महत्त्वपूर्ण है । पल्लवों के बाद भारतीय क्षेत्र में **कुषाण आए जिन्हें युची और तोखरी भी कहा जाता है ।**
- कुषाणों ने सर्व प्रथम बैक्ट्रिया और उत्तरी अफगानिस्तान पर अपना शासन स्थापित किया । तथा वहां से शक शासकों को भगा दिया ।
- अन्तंत : उन्होंने सिन्धु घाटी के निचले तथा गंगा के मैदान के अधिकाशं क्षेत्र पर अधिकार कर लिया ।
- **कुषाण वंश का संस्थापक कुजुल कडफिसेस** था। इसने **तांम्बे का सिक्का चलाया था** । सिक्कों के एक भाग पर यवन शासक हर्मियस का नाम उल्लेखित है तथा दूसरे भाग पर कुजुल का नाम खरोष्ठी लिपि में खुदा हुआ है ।
- कुजुल कडफिसेज के बाद विम कडफिसेज शासक बना जिसने सर्वप्रथम सोने का सिक्का जारी किया ।
- इसके अतिरिक्त कुषाणों ने प्राचीन भारत में नियमित रूप से सोने के सिक्के चलाने के साथ ही उत्तरी पश्चिमी भारत में सर्वाधिक संख्या में तांम्बे के सिक्के भी जारी किये ।
- इसके सिक्कों पर शिव नंदी तथा त्रिशूल की आकृति एवं महेशवर की उपाधि उत्कीर्ण हैं । विम कडफिसेज के बाद कनिष्क ने कुषाण साम्राज्य की सत्ता संभाली **कनिष्क कुषाण वंश का महानतम शासक था ।**
- इसके कार्य काल का आरम्भ 78 ई. माना जाता है । क्योंकि इसी ने **78 ई. में शक संवत~ आरम्भ किया ।**
- कनिष्क ने भारत में अपना साम्राज्य विस्तार मगध तक किया तथा यहीं से वह प्रसिद्ध विद्वान अश्वघोष को अपनी राजधानी पुरुषपुर ले गया ।
- कनिष्क बौद्ध धर्म की **महायान शाखा का संरक्षक था** । इसके सिक्कों पर बुद्ध का अंकन हुआ है । उसने **कश्मीर में चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन किया ।**
- कनिष्क कला और संस्कृत साहित्य का संरक्षक था । कनिष्क की राज सभा में पार्श्व वसुमित्र और अश्वघोष जैसे बौद्ध दार्शनिक विधमान थे ।
- **नागार्जुन और चरक भी [चिकित्सा]** कनिष्क के राजदरबार में थे ।
- कनिष्क के बाद कुषाण साम्राज्य का पतन प्रारम्भ हुआ । उसका उत्तराधिकारी हुविष्क था ।
- हुविष्क के पश्चात कनिष्क द्वितीय शासक बना जिसने सीजर की उपाधि ग्रहण की ।
- कुषाण वंश का अंतिम शासक वासुदेव था । जिसने अपना नाम भारतीय पर रख लिया ।
- वासुदेव शैव मतानुयायी था । इसके सिक्कों पर शिव के साथ गज की आकृति मिली है ।
- कनिष्क के सारनाथ बौद्ध अभिलेख की तिथि 81 ई. सन् है । यह इसके राज्यारोहण के तीसरे वर्ष स्थापित की गई थी ।

कुजुल कडफिसेस

- कुषाणों के एक सरदार का नाम कुजुल कडफिसेस था । उसने क़ाबुल और कंधार पर अधिकार कर लिया ।
- पल्लवों को पराजित कर उसने अपने शासन का विस्तार पंजाब के पश्चिम तक स्थापित कर लिया।
- मथुरा में इस शासक के तांबे के कुछ सिक्के प्राप्त हुए हैं ।

विम कडफिसेस

- विम तक्षम लगभग 60 ई. से 105 ई. के समय में शासक हुआ होगा।
- विम बड़ा शक्तिशाली शासक था। अपने पिता कुजुल के द्वारा विजित राज्य के अतिरिक्त विम ने पूर्वी उत्तर प्रदेश तक अपने राज्य की सीमा स्थापित कर ली। विम ने राज्य की पूर्वी सीमा बनारस तक बढ़ा ली। इस विस्तृत राज्य का प्रमुख केन्द्र मथुरा नगर बना। विम के बनाये सिक्के बनारस से लेकर पंजाब तक बहुत बड़ी मात्रा में मिले हैं।

कनिष्क

- कनिष्क कुषाण वंश का प्रमुख सम्राट था । जिसने **78. ई. में एक संवत् चलाया, जो शक संवत् कहलाता** है ।
- वर्तमान में इसे भारत सरकार द्वारा प्रयोग में लाया जाता है । इसकी राजधानी पुरुषपुर (पेशावर) तथा मथुरा थी ।
- कनिष्क का चीन के शासक पान चाओ से युद्ध हुआ था जिसमें पहले उसकी पराजय हुई पर बाद में उसकी विजय हुई ।
- कनिष्क के समय कश्मीर के कुण्डलवन में चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ, जिसमें बौद्ध धर्म हीनयान व महायान में विभाजित हो गया ।
- संगीति के अध्यक्ष वसुमित्र तथा उपाध्यक्ष अश्वघोष थे ।
- कनिष्क नए कश्मीर को जीतकर वहाँ कनिष्कपुर नामक नगर बसाया इसे द्वितीय अशोक भि कहा जाता है ।
- इसके शासन काल में **गंधार एवं मथुरा कला शैली का जन्म हुआ ।**
- इसके दरबार में पार्श्व, वसुमित्र, अश्वघोष, नागार्जुन तथा चरक विद्यमान थे । आयुर्वेदाचार्य चरक, कनिष्क का वैद्य था ।

- महाबलीपुरम के **एकाश्म मंदिर** जिन्हें रथ **कहा गया है** का निर्माण पल्लव राजा नरसिंह वर्मन प्रथम के द्वारा करवाया गया था।
- रथ मंदिरों की संख्या सात है। रथ मंदिरों में सबसे छोटा द्रोपदी रथ है जिसमें किसी प्रकार का अलंकरण नहीं मिलता है।

पल्लव कालीन कला

- दक्षिण भारत इतिहास में चालुक्य राष्ट्रकूट पल्लवकालीन कला अपनी चरमोत्कर्ष अवस्था में थी।
- **द्रविड़ शैली की स्थापना पल्लव नरेशों के शासन काल में हुई।** पल्लव राजाओं ने 6 वीं सदी से 10 वीं सदी तक शासन किया।
- पल्लवकालीन वास्तुकला के उदाहरण पल्लवों की राजधानी कांचीपुरम तथा महाबलीपुरम में पाए गए हैं।
- **पल्लवकालीन वास्तुकला को चार शैलियों में विभक्त किया गया है।**

महेन्द्रवर्मन प्रथम शैली

- इस शैली का विकास 600-640 ई. तक हुआ। इस शैली में **मंदिरों को मंडप** कहा गया है, क्योंकि इसके अंतर्गत स्तम्भ मंडप बने थे। ये ठोस चट्टानों को काटकर बनाए गए हैं, ये मंदिर अपनी सादगी से पहचाने जा सकते हैं।
- इस शैली में बने प्रमुख मंडपों में उन्दवल्लि (गुन्टूर जिला) का आनन्तशयन का मंडप तथा भखकोंड़ (उत्तरी अर्काट जिला) के मंडप विशेष उल्लेखनीय हैं।

मामल्ल शैली

- मामल्ल शैली को **नरसिंहवर्मन (मामल्ल)** ने चलाया था, उसने मामल्लपुर (महाबलिपुरम) नगर बसाया था। तथा **मामल्ल की उपाधि धारण** की थी, इसलिए उस द्वारा चलाई शैली मामल्ल शैली कहलाती है।
- इस शैली के अंतर्गत दो प्रकार के मंदिर बनाए गए हैं- मंडप तथा रथ, मंडपों की संख्या दस है। इस शैली के मंडप महेन्द्रवर्मन शैली से अधिक विकसित और अलंकृत हैं।
- इनमें से विशेष रूप से उल्लेखनीय है, बारह मंडप, पंच पांडव तथा महर्षि मंडप ये अपनी श्रेष्ठ स्थापत्य के लिए भी प्रसिद्ध है। इनमें देवताओं आदि को तथा पशुओं की मूर्तियाँ सर्वश्रेष्ठ रूपों में बनाई गयी हैं।
- इसी शैली के दूसरे प्रकार के रथ मंदिर हैं। ये **एक प्रस्तरीय मंदिर (Monolithic temples)** हैं। इन्हें सामान्यतया: **सप्त पगोड़ा** (Seven pogodas) के नाम से जाना जाता है। यद्यपि इनकी संख्या आठ है, ये हैं – (1) द्रौपदी रथ (2) अर्जुन रथ (3) भीम रथ (4) धर्मराज रथ (5) सहदेव रथ (6) गणेश रथ (7) पिडारी रथ तथा (8) वलैयान कुट्टई रथ।
- इन मंदिरों की कुछ प्रमुख विशेषताएं हैं- बहुत ही अलंकृत मुख्य द्वार, आठ कोण वाले सिंह स्तम्भ तथा अलंकार के लिए दीवारों पर राजा और रानी की मूर्तियाँ लगाई गई हैं। यद्यपि ये **मंदिर पांडवों के नाम पर** बनाए गए हैं लेकिन **वास्तव में ये शैव मंदिर** हैं।
- इन रथों का विकास बौद्ध विहार तथा चैत्यों से हुआ है। इनमें द्रौपदी रथ एक अलग शैली का है। इन रथों में से कुछ की छत पिरामिड के आकार की है, और कुछ के ऊपर शिखर है।
- ये मंदिर शिलाखण्डों को काट कर बनाए गए हैं और काष्ठ निर्मित रथों की शक्ल पर बनाए जान पड़ते हैं।
- यह आश्चर्य की बात है कि इन मंदिरों के निर्माताओं ने इन्हें अधूरा ही छोड़ दिया था।

राजसिंह शैली

- राजसिंह शैली का विकास पल्लव नरेश नरसिंहवर्मन द्वितीय, जिसने राजसिंह की उपाधि धारण की थी, के काल (680-720 ई.) में विकसित हुई थी।
- इस शैली के अन्तर्गत गुहा मंदिरों (Rock-out temples) के स्थान पर पाषाणों तथा ईंटों की सहायता से मंदिर बनाए गए।
- इसी शैली के मंदिरों में **सबसे प्रसिद्ध कांची का कैलाश-मंदिर तथा महाबलिपुरम का समुद्रतट का मंदिर (शोर टेम्पल) है।**
- कांची के मंदिर ईंट और पत्थर से बने हुए हैं। इनके शिखर बहुत ऊंचे और मंडप की छत चपटी है।
- श्री नीलकण्ठ शास्त्री के मतानुसार, "पल्लव शैली की सभी प्रमुख विशेषताएं इस मंदिर में बड़े ही आकर्षक रूप में संग्रहीत मिलती हैं।

पल्लव वास्तुकला की प्रमुख विशेषताएं हैं –

- सिंह स्तम्भ, चार दीवारी, शिखर, मंडप के सुदृढ़ स्तम्भ, भीतर बने छोटे-छोटे कमरे, मूर्तियाँ तथा अन्य उपकरणों से सजावट आदि ये सभी विशेषताएं कांची के कैलाश मंदिर में दिखाई देती हैं।
- इसी शैली (राजसिंह शैली) का सबसे परिपक्व एवं प्रौढ़ उदाहरण बैकुंठपेरुमाल का मंदिर है।
- यह कांची के कैलाश मंदिर से बड़ा है और इसके मुख्य मार्ग – मठ द्वार मंडप तथा देवालय पृथक् भवन के रूप में नहीं है बल्कि उनको एक भली-भांति जुड़े हुए ढांचे में एक साथ मिलाकर रखा गया है।

अपराजित शैली

- अपराजित शैली का प्रारम्भ पल्लव नरेश अपराजित (879- 897 ई.) के काल में हुआ। यह पल्लव काल के अन्तिम चरण की शैली है। **तंजौर का राज मंदिर इसी शैली में बना है।**
- इसके अंतर्गत स्तम्भों के शीर्ष का अधिक विकास हुआ मंदिरों के शिखर ऊपर की ओर पतले होते चले गए

- 1203 ई. में ऐबक ने चंदेल शासक परमर्दिदेव से कालिंजर को जीत लिया था।

मुहम्मद गौरी की मृत्यु

- 1206 ई. में मुहम्मद गौरी ने पंजाब के खोखर जनजाति के विद्रोह को दबाने के लिए भारत पर अंतिम आक्रमण किया
- गौरी ने लक्ष्मी की आकृति वाले कुछ सिक्के चलाये।

सारांश

- सर्वप्रथम देबल या दामोल पर कासिम ने जजिया कर लगाया।
- 1025 ई. में गुजरात के सोमनाथ मन्दिर पर महमूद का आक्रमण हुआ।
- 1191 ई. में तराइन के प्रथम युद्ध में "पृथ्वीराज तृतीय" ने गौरी को पराजित किया।
- 1192 ई. में तराइन के द्वितीय युद्ध में गौरी ने पृथ्वीराज तृतीय को बंदी बना लिया।
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1195 ई. में अन्हिलवाड़ा के शासक भीम द्वितीय पर आक्रमण किया । लेकिन ऐबक पराजित हुआ।
- भीम की मृत्यु के बाद गुजरात में सोलंकी वंश के स्थान पर बघेल वंश की की स्थापना हुई।

अध्याय – 2

दिल्ली सल्तनत काल

दिल्ली सल्तनत के क्रमानुसार पाँच वंश निम्नलिखित थे -

- 1. गुलाम वंश / मामलुक वंश (1206-1290)
- 2. खिलजी वंश (1290-1320)
- 3. तुगलक वंश (1320-1414)
- 4. सैयद वंश (1414-1451)
- 5. लोदी वंश (1451-1526)
- इनमें सें चार वंश मूलतः तुर्क थे जबकि अंतिम वंश लोदी वंश अफगान था।

प्रमुख सल्तनत शासकों की उपलब्धियाँ

गुलाम वंश के शासक :-

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई. तक)

- **भारत में तुर्की राज्य / दिल्ली सल्तनत /मुस्लिम राज्य की स्थापना करने वाला शासक ऐबक ही था।**
- **1192 ई. के तराइन के युद्ध में ऐबक ने गौरी की सहायता की।**
- जून 1206 में राज्याभिषेक करवाया तथा सुल्तान की बजाय मलिक/सिपहसलार की उपाधि धारण की।
- इसने अपने नाम के सिक्के भी नहीं चलाये एवं अपने नाम का खुतबा पढ़वाया **(खुतबा एक रचना होती थी जो मौलवियों से सुल्तान शुक्रवार की रात को नजदीक की मस्जिद में अपनी प्रंशसा में पढ़वाते थे)**खुतबा शासक की संप्रभूता का सूचक होता था।
- ऐबक ने प्रारंभ में इंद्रप्रस्थ दिल्ली के पास को सैन्यक मुख्यालय बनाया तथा कुछ समय बाद यल्दौज तथा कुबाजा (मुहम्मद गौरी के दास)के संघर्ष को देखते हुए लाहौर को अपनी राजधानी बनाया।

ऐबक की मृत्यु –

- 1210 ई. में लाहौर में चौगान पोलो खेलते समय घोड़े से गिर जाने के कारण ऐबक की मौत हो गई। इसका मकबरा लाहौर में ही बनाया गया है ।
- **कुतुबुद्दीन ऐबक ने कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी को समर्पित कुतुबमीनार का निर्माण प्रारम्भ करवाया । उसने दिल्ली में कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद तथा अजमेर में अढ़ाई दिन का झोंपड़ा मस्जिद का निर्माण करवाया ।**
- **कुरान के अध्यायों का सुरीले स्वर में उच्चारण करने के कारण ऐबक को कुरान खां** कहा जाता था । अपनी **उदारता के कारण इसको लाख बख्श कहा जाता था ।**

इल्तुतमिश (1210-1236 ई.)

- ऐबक की मृत्यु के समय इल्तुतमिश बदायूँ यू.पी. का इक्तेदार था।
- ऐबक की मृत्यु के बाद कुछ इतिहासकारों के अनुसार आरामशाह लाहौर में नया शासक बना, लेकिन दिल्ली के तुर्की अमीरों ने इल्तुतमिश को नया सुल्तान घोषित किया।
- **इल्तुतमिश दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक तथा प्रथम वैधानिक सुल्तान था।** इसने 1229 ई. में बगदाद के खलीफा अल-मुंतसिर-बिल्लाह से सुल्तान की उपाधि व खिलअत इजाजत प्राप्त की।
- **इल्तुतमिश ने अपने नाम का खुतबा पढ़वाया तथा मानक सिक्कें टंका चलाया था। टंका चांदी का होता था (1 टंका =48 जीतल)**
- **यह पहला मुस्लिम शासक था जिसने सिक्कों पर टकसाल का नाम अंकित करवाया था।**
- शहरों में इल्तुतमिश ने न्याय के लिए काजी, अमीर-ए-दाद जैसे अधिकारी नियुक्त किये।
- इल्तुतमिश ने अपने 40 तुर्कीर सरदारों को मिलाकर तुर्कान-ए-चहलगामी नामक प्रशासनिक संस्था की स्थापना की थी।

इक्ता प्रणाली का संस्थापक -

- इल्तुतमिश ने प्रशासन में इक्ता प्रथा को भी स्थापित किया। **भारत में इक्ता प्रणाली का संस्थापक इल्तुतमिश ही था।**
- इसने दोआब गंगा-यमुना क्षेत्र में हिन्दुओं की शक्ति तोड़ने के लिए शम्सीतुर्की उच्च वर्ग सरदारों को ग्रामीण क्षेत्र में इक्तायें जागीर बांटी।
- 1226 में रणथंभौर पर आक्रमण
- 1227 में नागौर पर आक्रमण
- 1232 में मालवा पर आक्रमण -इस अभियान के दौरान इल्तुतमिश उज्जैन से विक्रमादित्य की मूर्ति उठाकर लाया था।
- **1235 में ग्वालियर का अभियान** -इस अभियान के दौरान **इल्तुतमिश ने अपने पुत्रों की बजाय पुत्री रजिया को उत्तराधिकारी घोषित किया।**
- 1236 ई. में बामियान अफगानिस्तान पर आक्रमण यह इल्तुतमिश का अंतिम अभियान था।

निर्माण कार्य-

- स्थापत्य कला के अन्तर्गत इल्तुतमिश ने कुतुबुद्दीन ऐबक के निर्माण कार्य कुतुबमीनार को पूरा करवाया। भारत में सम्भवतः पहला मकबरा निर्मित करवाने का श्रेय भी इल्तुतमिश को दिया जाता है।

मृत्यु -

- बयाना पर आक्रमण करने के लिए जाते समय मार्ग मे इल्तुतमिश बीमार हो गया। इसके बाद इल्तुतमिश की बीमारी बढ़ती गई। अन्ततः अप्रैल 1236 में उसकी मृत्यु हो गई।
- इल्तुतमिश प्रथम सुल्तान था, जिसने दोआब के आर्थिक महत्व को समझा था और उसमें सुधार किया था।

रुकनुद्दीन फिरोजशाह (1236)

- इल्तुतमिश एवं खुन्दाबन्दे जहांशाह तुर्का या शाहतुर्कान की सन्तान रुकनुद्दीन फिरोजशाह उसका दूसरा पुत्र था।
- यद्यपि इल्तुतमिश ने अपना उत्तराधिकारी रजिया को बनाया था परन्तु प्रान्तीय सूबेदारों एवं शाहतुर्कान ने षडयंत्र कर रुकनुद्दीन को शासक बनवा दिया। उसे शासक बनाने में मुख्य भूमिका प्रांतीय सूबेदारों की थी।
- शाहतुर्कान एक तुर्क दासी थी।
- वह दिल्ली सल्तनत की पहली महिला थी जिसने शासन को नियंत्रित करने का प्रयास किया।

रजिया सुल्तान (1236-1240 ई.)

- सुल्ताना रजिया (उसका पुरा नाम 'जलॉलात उद्-दिन-रजिया था) का जन्म 1205 ई. में बदायूँ में हुआ था, उसने उमदत - उल -निस्वाँ की उपाधि ग्रहण की।
- **रजिया ने पर्दा प्रथा को त्यागकर पुरुषों के समान काबा चोगा पहनकर दरबार में कारवाई में हिस्सा लिया।**
- **दिल्ली की जनता ने उसे 'रजिया सुल्तान' मानकर दिल्ली की गद्दी पर बैठा दिया।**
- **वह दिल्ली सल्तनत की पहली एवं आखिरी मुस्लिम महिला शासिका थी।** 'सुल्तान रजियत अल दुनिया वाल दीन बिन्त अल सुल्तान' के रूप में सिक्के ढ़ाले गये।
- शासक बनने पर रजिया ने उद्मत-उल-निस्वां की उपाधि धारण की। रजिया को भी मलिक मुहम्मद सलारी बदायूँ, कबीर खाँ एयाज मुल्तान (मलिक जानि)लाहौर, (मलिक सैफूद्दीन कूची (हाँसी)जैसे इक्तेदारों का सामना करना पड़ा। (लेकिन रजिया ने अपनी चालाकी व कूटनीति से इनमें आपसी फूट पड़वा दी। तथा विद्रोह समाप्त कर दिया।
- रजिया के काल में तुर्क नुरुद्दीन (नूर तुर्क) ने नेतृत्व में किरामित (करामाथियों) एवं अहमदियाँ सम्प्रदाय वालों ने मस्जिद में विद्रोह किया जिसे दबा दिया गया।
- 1238 ई. में गजनी और बामियान के ख्वारिज्म सूबेदार मलिक हसन कालुंग ने मंगोलों के विरुद्ध रजिया से सहायता मांगी किन्तु रजिया ने उसे 'बरन' की आय देने का वादा तो किया लेकिन सैनिक सहायता देने से इन्कार कर मंगोल आक्रमण से अपने राज्य को बचा लिया।

अध्याय – 4

मध्यकाल में कला एवं वास्तु

(1) बाबर की स्थापत्य कला -

- बाबर भारतीय स्थापत्य कला को अच्छा नहीं समझता था, इसीलिए उसे आगरा व दिल्ली में भारतीयों द्वारा बनवाई गई इमारतें पसन्द नहीं आई।
- बाबर ने भवनों के निर्माण के लिए कुस्तुनतुनिया से कारीगरों को बुलवाया । बाबर ने आगरा, अलीगढ़, सीकरी, धौलपुर, बयाना, ग्वालियर आदि स्थानों पर कुएँ, तालाब, फब्बारे आदि बनवाए। बाबर द्वारा बनवाए गए निम्नलिखित दो भवन ही आज दिखाई देते हैं ।

(i) पानीपत की काबुली मस्जिद, और (ii) सम्भल की जामा मस्जिद।

ये दोनों मस्जिदें 1526 ई. में बनवाई गई थीं। इन मस्जिदों में कोई विशेष नमूना नहीं है।

(2) हुमायूँ की स्थापत्य कला -

- हुमायूँ का अधिकांश जीवन युद्धों व भाग-दौड़ में बीता, अतः उसे इमारतें बनवाने का समय नहीं मिला । फिर भी **हुमायूँ ने 'दीन-ए-पनाह' नामक महल दिल्ली में बनवाया।**
- शेरशाह सूरी ने शायद इसे नष्ट कर दिया। हुमायूँ ने फतेहाबाद व आगरा में भी मस्जिदें बनवाई। **स्थापत्य कला की एक महत्वपूर्ण इमारत हुमायूँ का मकबरा है।** यद्यपि इसका निर्माण अकबर के प्रारम्भिक शासनकाल में हुआ, परन्तु यह हुमायूँ के काल की इमारत है। यह मकबरा ईरानी और भारतीय शैलियों के मिश्रण का नमूना है। इसमें फारसी शैली का प्रभाव भी है। '

(3) शेरशाह की स्थापत्य कला -

- **शेरशाह-वास्तुकला का बहुत प्रेमी था।** वह प्रत्येक शहर में एक किला बनवाना चाहता था और मिट्टी की बनी हुई सरायों को पक्के मकानों में बदलकर उन्हें राज्य की सुरक्षा करने की चौकियाँ बनाना चाहता था। दिल्ली का पुराना किला शेरशाह सूरी द्वारा बनवाया हुआ है।
- **शेरशाह सूरी द्वारा बनवाई गई प्रसिद्ध इमारतों में शेरशाह का मकबरा भी है।**

(4) अकबर की स्थापत्य कला -

- मुगलों की स्थापत्य कला सही अर्थ में अकबर के शासनकाल से प्रारम्भ होती है। **अकबर ने अपनी स्थापत्य कला में ईरानी व भारतीय कला का समन्वय स्थापित किया। अकबर के काल की सभी इमारतें लाल पत्थर की हैं और सजावट के लिए संगमरमर का प्रयोग किया गया है।**
- अकबर द्वारा बनवाए गए भवन या इमारतें निम्न प्रकार हैं

(i) आगरे का लाल किला

(ii) जहाँगीरी महल

(iii) अकबरी महल

(iv) लाहौर का किला,

(v) इलाहाबाद का किला,

(vi) दीवान-ए-आम

(vii) जोधाबाई का किला,

(viii) बीरबल का महल

(ix) पंचमहल, यह भी सीकरी में है और हिन्दू-मुस्लिम स्थापत्य का मिश्रण

(x) **जामा मस्जिद,** इसका निर्माण 1571 ई. में हुआ। **यह चित्रकारी की दृष्टि से फतेहपुरी सीकरी की सर्वश्रेष्ठ इमारत है।**

(xi) बुलन्द दरवाजा, इसे अकबर ने गुजरात की विजय के बाद बनवाया था। यह फतेहपुर सीकरी में स्थित है और मुग़ल कालीन दरवाजों में श्रेष्ठ है।

(xii) **शेख सलीम चिश्ती का मकबरा,** यह 1571 ई. में बना था। इसकी चित्रकारी देखने योग्य है।

(xiii) सिकन्दरा, इसका निर्माण कार्य अकबर ने प्रारम्भ करवाया था, परन्तु यह 1623 ई. में जहाँगीर के शासनकाल में बनकर तैयार हुआ।

अकबर द्वारा बनवाए गए भवनों की इतिहासकारों ने बड़ी प्रशंसा की है । स्मिथ ने फतेहपुर सीकरी की इमारतों को अभूतपूर्व व पत्थर पर अंकित कहानी कहा है।

(5) जहाँगीर की स्थापत्य कला -

जहाँगीर को चित्रकला से ही अधिक लगाव था, वास्तुकला से नहीं । उसके समय की दो इमारतें प्रमुख हैं ।

(i) एत्मादुद्दौला का मकबरा - यह मकबरा नूरजहाँ ने अपने पिता की याद में 1626 ई. में बनवाया था। यह आगरा में स्थित है और सफेद संगमरमर का बना है।

(ii) जहाँगीर का मकबरा - इसका निर्माण भी नूरजहाँ द्वारा करवाया गया था। यह लाहौर के निकट रावी नदी के किनारे शाहदरा में स्थित है। समाधि पर संगमरमर की पच्चीकारी की गई है।

(6) शाहजहाँ की स्थापत्य कला - भवन निर्माण की दृष्टि से शाहजहाँ का काल मुग़ल काल का स्वर्ण युग था।

उसके द्वारा बनवाई गई इमारतों में मौलिकता, सुन्दरता और कोमलता है। इन भवनों में नक्काशी व चित्रकारी विशेष है। शाहजहाँ के काल में निम्नलिखित इमारतों का निर्माण हुआ ।

हुआ। **यह ऐसा धार्मिक आंदोलन था, जिसके राजनीतिक लक्ष्य थे।**

- यह आदिवासी जनता को संगठित करने के लिए नये 'पंथ' के निर्माण का आंदोलन था। ताना भगत आंदोलन में अहिंसा को संघर्ष के अमोघ अस्त्र के रूप में स्वीकार किया गया।
- बिरसा आंदोलन के तहत झारखंड में ब्रिटिश हुकूमत के ख़िलाफ संघर्ष का ऐसा स्वरूप विकसित हुआ, जिसको क्षेत्रीयता की सीमा में बांधा नहीं जा सकता था।
- **इस आंदोलन ने संगठन का ढांचा और मूल रणनीति में क्षेत्रीयता से मुक्त रहकर ऐसा आकार ग्रहण किया कि वह महात्मा गाँधी के नेतृत्व में जारी आज़ादी के 'भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ' का अविभाज्य अंग बन गया।**

पहाड़ियाँ विद्रोह

- 1770 के विद्रोह के दसक में राजमहल के पहाड़ी क्षेत्रों वर्तमान झारखंड में ब्रिटिश भू- राजस्व व्यवस्था के विरोध में पहाड़िया विद्रोह हुआ ।
- **आदिवासियों के छापामार संघर्ष से परेशान अंग्रेजी सरकार ने सन् 1778 में इनसे समझौता कर इनके क्षेत्र को दामिनी कोह क्षेत्र घोषित कर दिया ।**

बस्तर का विद्रोह

- **सन् 1910 में बस्तर के राजा के विरुद्ध जगदलपुर क्षेत्र में विद्रोह हुआ ।** जिसका दमन ब्रिटिश सेना ने किया ।
- **इस विद्रोह का मुख्य कारण वन अधिनियमों का क्रियान्वयन और सामन्ती करों का करारोपण था ।**

- **1857 ई. की क्रांति**

- **कारण एवं परिणाम**
- 1857 ई. में ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह आधुनिक भारतीय इतिहास की एक अभूतपूर्व तथा युगान्तकारी घटना है। भारत में अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना छल, धोखे और विश्वसघात से हुई थी।
- भारत में जिस तरह ब्रिटिश सत्ता कायम हुई उस तरह इतिहास में और कोई सत्ता कायम नहीं हुई थी।

विद्रोह का स्वरूप

- 1857 के विद्रोह के संबंध में भिन्न भिन्न विचार देते हुए कुछ ने इसे साम्राज्यवादी विस्तार के कारण इसे सैनिक विद्रोह की संज्ञा दी है । तो कुछ ने इसे दो धर्मों अथवा दो नस्लों का युद्ध बताया है ।
- सम्राज्यवादी विचार धारा के इतिहासकार सर जॉन लॉरेन्स व सर जॉन सीले ने सैनिक विद्रोह की संज्ञा दी ।

विद्रोह के लिए उत्तरदायी कारण

- **गवर्नर जनरल लॉर्ड कैनिंग के शासनकाल की एक महत्त्वपूर्ण घटना 1857 का विद्रोह थी ।**
- इसने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला दी और कई बार ऐसा प्रतीत होने लगा था कि भारत में अंग्रेजी राज्य का अन्त हो जायेगा यहाँ हम 1857 ई. के विद्रोह के महत्त्वपूर्ण कारणों का विश्लेषण करेंगे ।

राजनीतिक कारण

- अंग्रेज भारत में व्यापारी के रूप में आये थे, परन्तु धीरे-धीरे उन्होंने राज्य स्थापना तथा उसके विस्तार का कार्य आरम्भ किया । धीरे-धीरे **भारतीयों की राजनीतिक स्वतंत्रता का अपहरण होता गया और वे अपने राजनीतिक तथा उनसे उत्पन्न अधिकारों से वंचित होते गये ।**
- जिसके फलस्वरूप उनमें बड़ा असंतोष फैला, जिसका विस्फोट 1857 ई. के विद्रोह के रूप में हुआ। इस क्रांति के राजनीतिक कारण निम्नलिखित थे-

(1) डलहौजी की साम्राज्यवादी नीतिः-

- 1857 की क्रांति के लिए डलहौजी की साम्राज्यवादी नीति काफी हद तक उत्तरदायी थी। **उसने विजय तथा पुत्र गोद लेने कई निषेध नीतियों द्वारा देशी राज्यों के अपहरण का एक कुचक्र चलाया ।** जिसने समपूर्ण भारत के देशी नरेशों को आतंकित कर दिया और उनके हृदय में अस्थिरता तथा आशंका का बीजारोपण कर दिया ।
- **लॉर्ड डलहौजी ने व्यपगत सिद्धांत या हड़प-नीति को कठोरता पूर्वक अपनाकर देशी रियासतों के निःसन्तान राजाओं को उत्तराधिकार के लिए दत्तक-पुत्र लेने की आज्ञा नहीं दी** और सतारा (1848), नागपुर (1853), झांसी (1854), बरार (1854), संभलपुर, जैतपुर, बघाट, अदपुर आदि रियासतों को कथनी के ब्रिटिश-साम्राज्य में मिला लिया । उसने 1856 ई. में अंग्रेजों के प्रति वफादार अवध रियासत को कुशासन के आधार पर ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया।
- उसने अवध के नवाब वाजिद अली शाह को गद्दी से उतार दिया । उसने तंजौर और कर्नाटक के नवाबों की राजकीय उपाधियां छीन ली ।
- मुग़ल बादशाह को नजराना देने के लिए अपमानित करना । सिक्कों पर नाम गुदवाने जैसी परम्परा को डलहौजी द्वारा समाप्त करना । आदि घटनाओं ने 1857 के विद्रोह को हवा दी ।

(2) मुग़ल सम्राट के साथ दुर्व्यवहार :-

- अंग्रेजों ने भारतीय शासकों के साथ दुर्व्यवहार भी किया । उन्होंने मुग़ल सम्राट को नजराना देना व सम्मान प्रदर्शित करना बन्द कर दिया इतना ही नहीं **लॉर्ड**

डलहौजी ने मुग़ल सम्राट की उपाधि को समाप्त करने का निश्चय किया।

- उसने बहादुरशाह के सबसे बड़े पुत्र मिर्जा जवाबख्त को युवराज स्वीकार करने से इन्कार कर दिया और **बहादुरशाह से अपने पैतृक निवास स्थान लाल किले को खाली कर कुतुब में रहने के लिए कहा।**

(3) <u>ब्रिटिश पदाधिकारियों के वक्तव्य</u>-: डलहौजी की साम्राज्यदी नीति के साथ-साथ कुछ अंग्रेज अधिकारियों ने ऐसे वक्तव्य दिये जिससे देशी नरेश बहुत आतंकित हो गये और अपने भावी अस्तित्व के संबंध मे पूर्ण रूप से निराश हो उठे।

(4) <u>नाना साहब और रानी लक्ष्मी बाई का असंतोष</u> :-

- झांसी की रानी लक्ष्मी बाई तथा पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहब अंग्रेजों के व्यवहार से बहुत नाराज थे।
- **अंग्रेजों ने झांसी के राजा-गंगाधर राव के दत्तक पुत्र दामोदर राव को उत्तराधिकार से वंचित करके झांसी राज्य को कथनी के राज्य में शामिल कर लिया था।**
- इस अत्याचार को रानी लक्ष्मीबाई सहन न कर सकी और क्रांति के समय उसने विद्रोहियों का साथ दिया।

(5) <u>अवध का विलय और नवाब के साथ अत्याचार</u>:-

- अंग्रेजों ने बलपूर्वक लखनऊ पर अधिकार करके नबाव वाजिद अली शाह को निर्वासित कर दिया था और निर्लज्जतापूर्वक महलों को लूटा था।
- बेगमों के साथ बहुत अपमानजनक व्यवहार किया गया था। इससे अवध के सभी वर्ग के लोगों में बड़ा असंतोष फैला और अवध क्रांतिकारियों का केन्द्र बन गया।

(6) <u>प्राचीन राजनीतिक व्यवस्था का विध्वंस</u> :-

- अंग्रेजों की विजय के फलस्वरूप प्राचीन राजनीतिक व्यवस्था पूर्ण रूप से ध्वस्त हो गई थी।
- **ब्रिटिश शासन से पहले भारतवासी राज्य की नीति को पूरी तरह प्राभावित करते थे परन्तु अब वे इससे वंचित हो गये।** अब केवल अंग्रेज ही भारतीयों के भाग्य के निर्माता हो गये।

(7) <u>अंग्रेजों के प्रति विदेशी भावना</u> :-

- भारतीय जनता अंग्रेजों से इसलिए भी असन्तुष्ट थी क्योंकि वे समझते थे कि उनके शासक उनसे हजारों मील दूर रहते हैं। तुर्क, अफगान और मुग़ल भी भारत में विदेशी थे लेकिन वे भारत में ही बस गये थे और इस देश को उन्होंने अपना देश बना लिया था।
- जबकि अंग्रेजों ने ऐसा कोई काम नहीं किया था। अतः भारतीयों के हृदय और मस्तिष्क से अंग्रेजों के प्रति विदेशी की भावना नहीं निकल सकी थी।

(8) <u>उच्च वर्ग में असंतोष</u>:- देशी राज्यों के नष्ट हो जाने से न केवल उनके नरेशों का विनाश हुआ जबकि उच्च वर्ग के लोगों की स्थिति पर भी बड़ा घातक प्रहार हुआ।

<u>प्रशासनिक कारण</u>-

(1) नवीन शासन-पद्धति को समझने में कठिनाई होना :- भारतीय जिस शासन को सदियों से देखते आ रहे थे, वह समाप्त कर दिया गया था। नई शासन-पद्धति को समझने में उन्हें कठिनाई आ रही थी तथा, उसे वे शंका की दृष्टि से देखते थे।

(2) भारतीयों को प्रशासनिक सेवाओं से अलग रखने की नीति :-

- अंग्रेजों ने शुरू से ही भारतीयों को प्रशासनिक सेवाओं में शामिल न कर भेद-भाव पूर्ण नीति अपनाई। लॉर्ड कार्नवालिस का भारतीयों की कार्य कुशलता और ईमानदारी पर विश्वास नहीं था। अतः उसने **उच्च पदों पर भारतीयों के स्थान पर अंग्रेजों को नियुक्त कर दिया।**
- परिणामतः भारतीयों के लिए उच्च पदों के द्वार बन्द हो गये। यद्यपि 1833 ई. के कम्पनी के चार्टर एक्ट में यह आवश्वासन दिया गया था कि धर्म, वंश, जन्म, रंग या अन्य किसी आधार पर सार्वजनिक सेवाओं में भर्ती के लिए कोई भेदभाव नहीं बरता जाएगा, परन्तु अंग्रेजों ने इस सिद्धांत का पालन नहीं किया।
- **सैनिक और असैनिक सभी सार्वजनिक सेवाओं में उच्च पद यूरोपियन व्यक्तियों के लिए ही सुरक्षित रखे गये थे।** सेना में एक भारतीय का सबसे बड़ा पद सूबेदार का होता था जिसे 60 या 70 रुपये प्रति माह वेतन मिलता था।
- असैनिक सेवाओं में एक भारतीय को मिल सकने वाला सबसे बड़ा पद सदर अमीन का था जिसे 500/- रुपये प्रति माह वेतन मिलता था। उच्च पद देना अंग्रेज अपना एकाधिकार समझते थे।

(3) <u>ब्रिटिश न्याय व्यवस्था से भारतीयों में असंतोष</u> :-

- ब्रिटिश न्याय प्रशासन एक भिन्न प्रशासनिक व्यवस्था का प्रतीक था। विधि प्रणाली और सम्पत्ति अधिकार पूरी तरह से नये थे। न्याय प्रणाली में अत्यधिक धन तथा समय नष्ट होता था और फिर भी निर्णय अनिश्चित था।
- भारतीय इस न्याय व्यवस्था को पसन्द नहीं करते थे। अगर एक छोटा सा किसान भी किसी जमींदार की शिकायत करता था तो जमींदार को न्यायालय में जाना पड़ता था। इस प्रकार सम्मानित व्यक्ति अंग्रेजी न्यायालयों से असंतुष्ट थे।

(4) <u>दोषपूर्ण भू-राजस्व प्रणाली</u> :-

- **भू-राजस्व प्रणाली को नियमित करने के नाम पर अंग्रेजों ने अनेक जमींदारों के पट्टों की छानबीन की। जिन लोगों के पास जमीन के पट्टे नहीं मिले, उनकी जमीनें छीन ली गई।**

- ब्रिटिश जज भी अंग्रेजों के प्रति पक्षपात करते थे । इसलिए, अंग्रेजों के अपमानजनक दुर्व्यवहार के विरुद्ध भारतीय न्याय भी नहीं पा सकते थे ।
- समय के साथ-साथ अंग्रेजों के व्यक्तिगत अत्याचार की घटनाएं कम होने के बजाय बढ़ती जा रही थी । ये घटनाएं भारतीयों में असंतोष का एक मुख्य कारण थी ।

धार्मिक कारण

- कूटनीतिज्ञ अंग्रेजों ने अप्रत्यक्ष रूप से ईसाई धर्म के प्रचार का भागीरथ प्रसार किया ।
- जिससे भारतीय जनता विशेषकर सैनिकों में आतंक छा गया । अंग्रेजों द्वारा भारतीय धर्म में हस्तक्षेप के निम्नलिखित प्रयास किये गए –

(1) ईसाई मिशनरियों को भारत में धर्म प्रसार की स्वीकृति देना :-

- **1813 ई. के चार्टर एक्ट द्वारा अंग्रेजी सरकार ने ईसाई मिशनरियों को भारत में धर्म प्रचार की स्वीकृति प्रदान कर दी थी ।**
- उसके बाद ईसाई पादरी बड़ी संख्याओं में भारत आने लगे । उनका एक मात्र लक्ष्य भारत में ईसाई धर्म का प्रसार था । शुरू में अंग्रेज शासकों ने पादरियों को धर्म-प्रचार में कोई सहायता देना पसंद नहीं किया ।
- लेकिन बाद में शासक वर्ग द्वारा ईसाई धर्म प्रचारकों को आर्थिक सहायता, राजकीय संरक्षण तथा प्रोत्साहन दिया जाने लगा । इस कारण हिन्दू और मुसलमान दोनों को ही अपने-अपने धर्म के लिए खतरा महसूस हुआ।

(2) मिशनरियों की उद्दण्डता :-

- ईसाई धर्मोपदेशक बडे अहंकारी तथा उद्दण्ड होते थे । वे भारतीयों के सामने खुले रूप से इस्लाम तथा हिन्दू धर्मों की निन्दा किया करते थे और उनके महापुरुषों, अवतारों और पैगम्बरों को गालियां दिया करते थे ।
- ऐसी स्थिति में हिन्दुओं तथा मुसलमानों दोनों को शंका होने लगी और वे अंग्रेजों से घृणा करने लगे।

(3) शिक्षण संस्थाओं द्वारा ईसाई धर्म का प्रचार :-

- धर्म के लिए सबसे बड़ा खतरा ईसाई पादरियों द्वारा संचालित स्कूलों से हुआ । **इन स्कूलों का उद्देश्य भारतीयों को शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ, ईसाई धर्म का प्रचार करना भी था ।**
- इन स्कूलों में हिन्दू बच्चों से ईसाई धर्म के संबंध में प्रश्न पूछे जाते थे । इससे उच्च वर्ग के भारतीयों की यह धारणा हो गई कि यदि उनके पुत्र नहीं तो उनके पौत्र तो निश्चय ही ईसाई बन जायेंगे ।
- इसके विपरीत **सरकारी स्कूलों में हिन्दू अपने धर्म की शिक्षा नहीं दे सकते थे क्योंकि राज्य अपने को धर्म-निरपेक्ष बतलाता था ।** राज्य की इस दोहरी नीति से भारतीयों में बड़ा असंतोष फैला ।

(4) ईसाई बनने वालों को सुविधाएं देना :-

- ईसाई धर्म की ओर आकर्षित करने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रलोभन दिए जाते थे । जो हिन्दू अथवा मुसलमान ईसाई धर्म को स्वीकार कर लेते थे उन्हें सरकार अनेक प्रकार से सहायता देती थी और सरकारी नौकरियां देकर अन्य लोगों को भी ईसाई बनाने के लिए प्रोत्साहित करती थी ।
- अपराधियों को अपराध से बरी कर दिया जाता था, यदि वे ईसाई धर्म को स्वीकार कर लेते थे । लॉर्ड कैनिंग ने तो ईसाई धर्म के प्रचार के लिए लाखों रुपये दिए । इससे लोग स्वेच्छा से ईसाई बनने लगे । फलतः लोगों में असंतोष बढ़ता गया।

(5) सम्पत्ति संबंधी उत्तराधिकार के नियम में परिवर्तन :-

- 1856 ई. में जो पैतृक सम्पत्ति-संबंधी कानून बनाया गया उसके अनुसार यह निश्चित किया गया कि धर्म परिवर्तन करने पर किसी व्यक्ति को उसकी पैतृक सम्पत्ति से वंचित नही किया जायेगा । उसे भी भारतीयों ने ईसाई धर्म को प्रोत्साहित करने का साधन समझा ।

(6) गोद-प्रथा का निषेध :- डलहौजी ने हिन्दुओं को पुत्र गोद लेने पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। लेकिन **हिन्दू धर्म शासन के अनुसार परलोक में शांति प्राप्त करने के लिए निःसन्तान व्यक्ति के लिए पुत्र को गोद लेना बहुत जरूरी समझा जाता था । अतएवः डलहौजी की इस नीति से भारतीयों में बड़ा असंतोष फैला ।**

(7) जेलों में ईसाई धर्म का प्रसार :-

- अंग्रेजों ने स्कूलों के साथ-साथ जेलों को भी ईसाई धर्म प्रसार का साधन बनाया था । जेल में प्रतिदिन सुबह एक ईसाई अध्यापक ईसाई धर्म की शिक्षा देता था। 1845 ई. में एक नये नियम के अन्तर्गत जेल में सभी कैदियों का भोजन एक ब्राह्मण व्यक्ति के द्वारा सामूहिक रूप से बनाया जाना शुरू किया गया ।
- उस समय प्रत्येक कैदी अपना भोजन स्वयं बनाता था । इस नये नियम से प्रत्येक कैदी को अपनी जाति खो देने का डर लगा क्योंकि अन्तर्जातीय खान-पान को हिन्दू स्वीकार नहीं करते थे । जेल से छूटे हुए व्यक्ति को हिन्दू परिवार में शामिल नहीं करते थे।

तात्कालिक कारण

- उपरोक्त विवरण से प्रकट होता है कि भारतीय सैनिक न केवल उन सभी बातों से असन्तुष्ट थे जिनसे भारतीय नागरिक असन्तुष्ट थे बल्कि उनके असंतोष के कुछ अलग कारण भी थे ।

- अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह की भावना सैनिकों में आ चुकी थी उसे केवल एक चिंगारी की जरूरत थी और वह चिंगारी चर्बी लगे हुए कारतूसों ने प्रदान कर दी ।
- **1856 ई. में भारत सरकार ने पुरानी बन्दूकों को हटाकर नई 'एनफील्ड राइफल' को सेना में प्रयोग करना चाहा । उसके लिए जो कारतूस बनाये गये थे उन्हें बन्दूक में भरने से पहले मुंह से खोलना पड़ता था । इन राइफलों के कारतूसों को चिकना बनाने में गाय और सूअर की चर्बी का प्रयोग होता था ।** यद्यपि अंग्रेज अधिकारियों ने इस बात को नहीं माना लेकिन सैनिकों को उन पर विश्वास नहीं हुआ ।
- यह भारतीय सैनिकों की धार्मिक भावनाओं की सूर अवहेलना थी । उन्हें यह विश्वास हो गया कि अंग्रेज हिन्दू और मुसलमान दोनों का ही धर्म भ्रष्ट करना चाहते हैं । अत: उन्होंने धर्म भ्रष्ट होने के बजाय ऐसे दूषित शासन का अन्त कर देना ही उचित समझा ।
- इस प्रकार, **कारतूसों की घटना 1857 ई. के विद्रोह का मुख्य कारण बनी ।** सैनिकों की सफलता ने भारतीय नागरिकों को भी विद्रोह करने के लिए तैयार कर दिया ।

विद्रोह का प्रारम्भ एवं प्रसार

- **सर्वप्रथम क्रांति की शुरुआत कलकत्ता के पास बैरकपुर छावनी में हुई ।** यहाँ के सैनिकों ने नए कारतूसों का प्रयोग करने से इन्कार कर विद्रोह का झण्डा खडा कर दिया।
- **29 मार्च, 1857 ई. को एक ब्राह्मण सैनिक मंगल पाण्डे ने चर्बी वाले कारतूसों के प्रयोग की आज्ञा से नाराज होकर अपने अन्य साथियों के साथ मिलकर कुछ अंग्रेज सैनिक अधिकारियों को मार डाला ।**
- परिणाम स्वरूप मंगल पाण्डे तथा उसके सहयोगियों को फांसी की सजा दे दी गई । उसके बाद 19 तथा 34 नम्बर की देशी पलटने समाप्त कर दी गई । बैरकपुर की छावनी की घटना के बाद मेरठ में भी विद्रोह शुरू हो गया ।
- सैनिकों ने कारागह से बन्दी सैनिकों को मुक्त करा लिया तथा कई अंग्रेजों का वध कर दिया गया । मेरठ से यह क्रांतिकारी दिल्ली की ओर रवाना हुए।

दिल्ली

- 11 मई 1857 ई. को मेरठ के विद्रोही सैनिक दिल्ली पहुँचे उस समय दिल्ली में कोई अंग्रेज पलटन नहीं थी । विद्रोहियों का दिल्ली के भारतीय सैनिकों ने स्वागत किया और वे भीड़ के साथ शामिल हो गये । जैसे ही उन्होंने अपने सभी अंग्रेज अधिकारियों की हत्या कर दी ।
- **विद्रोहियों ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया और बहादुर शाह द्वितीय को नेतृत्व स्वीकार करने की अपील की ।** मुगल बादशाह ने संकोच किया तथा मेरठ के विद्रोह और विद्रोहियों के दिल्ली पहुँचने की सूचना आगरा में लेफ्टिनेंट गवर्नर को भिजवाई ।
- लेकिन अंत मे विवश होकर उन्होंने क्रांतिकारियों का नेतृत्व करना स्वीकार कर लिया । अंग्रेज दिल्ली से भाग गये और दिल्ली पर मुग़ल सम्राट बहादुर शाह की पताका फहराने लगी ।
- मुग़ल शहजादों मिर्जा मुग़ल , मिर्जा खिजिर, सुल्तान और मिर्जा अबूबकर ने संयोग से प्राप्त इस अवसर से पूरा-पूरा लाभ उठाया ।
- उन्हें लगा कि यह उनके वंश के पुराने गौरव को पुन: प्रतिष्ठित करने का मौका है । मेरठ में विद्रोह और दिल्ली पर अधिकार की खबर पूरे देश में फैल गई और कुछ ही दिनों में उत्तर भारत के अधिकांश भागों में क्रांति का प्रसार हो गया।

अवध

- **मेरठ** की घटनाओं की सूचना 14 मई को और दिल्ली पर क्रांतिकारियों के अधिकार की खबर 15 मई को लखनऊ पहुँची । उस समय सर **हेनरी लॉरेंस वहां का चीफ कमिश्नर था ।**
- उसने विद्रोह के संकट से बचने के लिए आवश्यक प्रयास किये लेकिन लखनऊ में भी विद्रोह को लम्बे समय तक टाला नहीं जा सका ।
- 30 मई को लखनऊ से कुछ मील दूर मुरिआव छावनी में देशी सिपाहियों ने यूरोपीय फौज पर सशस्त्र हमला कर दिया । इसमें कुछ लोगों की जान गई ।
- **विद्रोह लखनऊ तक ही सीमित नहीं रहा । जल्द ही यह सीतापुर, फैजाबाद, बनारस, इलाहाबाद, आजमगढ़, मथुरा, मैनपुरी, अलीगढ़, बुलन्दशहर, आगरा, बरेली, फर्रुखाबाद, बिज्नौर, शाहजापुर, मुज्जफरनगर, बदायूँ, दानापुर आदि क्षेत्र में, जहां भारतीय सैनिक तैनात थे, वहाँ फैल गया ।**
- सेना के विद्रोह करने से पुलिस तथा स्थानीय प्रशासन भी तितर-बितर हो गया । जहां भी विद्रोह भड़का सरकारी खजाने को लूट लिया गया और गोले-बारूद पर कब्जा कर लिया गया । बैरकों, थाने के राजस्व कार्यालयों को जला दिया गया, कारागार के दरवाजे खोल दिये गये ।
- गाद के किसानों तथा बेदखल किये गये जमींदारों ने साहूकारों एवं नये जमींदारों, जिन्होंने उन्हें बेदखल किया था हमला कर दिया । उन्होंने सरकारी दस्तावेजों तथा साहूकारों के बही खातों को नष्ट कर दिया अथवा लूट लिया ।
- इस प्रकार क्रांतिकारियों ने औपनिवेशिक शासन के सभी चिन्हों को मिटाने का प्रयास किया । जिन क्षेत्रों के लोगों ने विद्रोह में भाग नहीं लिया उनकी सहानुभूति भी विद्रोहियों के साथ थी।

स्वीकार नहीं किया तो भारत कई टुकड़ों में बंट जाएगा।

- अंतरिम सरकार की विफलता से कांग्रेस ने सीख लेते हुए विभाजन के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। दरअसल अंतरिम सरकार में शामिल मुस्लिम लीग सरकार से ही असहयोग कर रही थी। इससे जनता की सुरक्षा बाधित हो रही थी।
- **देश में प्रशासनिक एवं सैन्य ढाँचे की निरंतरता को बनाए रखने के लिए विभाजन को तत्काल स्वीकार किया गया। अन्यथा सेना नेतृत्वविहीन हो सकती थी और ऐसे में सैन्य तंत्र की स्थापना संभव थी।**

निष्कर्ष :- कह सकते हैं कि कांग्रेस द्वारा विभाजन स्वीकार करना एक कठोर निर्णय था जो तत्कालीन परिस्थितियों के समाधान हेतु उठाया गया एक यथार्थ वादी कदम था। इतना जरूर है कि कांग्रेस ने हिंदू मुस्लिम दो राष्ट्र के आधार पर विभाजन को स्वीकार नहीं किया।

विभाजन के लिए कांग्रेस का उत्तरदायित्वः –

- कांग्रेस ने आरंभ में ही 1909 के मुस्लिम पृथक निर्वाचन प्रणाली का विरोध न कर के 'फूट डालो और राज करो' के ब्रिटिश सरकार की नीति को ही स्वीकार किया जो उसकी त्रुटि थी ।
- वस्तुतः जिस तरह से कांग्रेस ने 1905 में बंगाल विभाजन का तत्काल विरोध किया था और आगे चलकर दलित पृथक निर्वाचन प्रथककता का विरोध कर उसे रह करवाया था, उसी तर तरह 1909 के मुस्लिम निर्वाचन का विरोध के संदर्भ में करने में कांग्रेस असफल रही।
- इतना ही नहीं, 1916 के लखनऊ अधिवेसन में कांग्रेस ने मुस्लिम पृथक निर्वाचन प्रणाली को स्वीकार भी कर लिया जिससे अंततः साम्प्रदायिक राजनीति को बढ़ावा मिला और मुस्लिम लीग को महत्व बढ़ा।
- 1928 में नेहरू रिपोर्ट में मुस्लिम पृथक निर्वाचन को रद्द कर संयुक्त निर्वाचन की बात की गयी जो कांग्रेस की भूल साबित हुई क्योंकि इससे मुस्लिम समाज में उनके अधिकारों के होने की भावना मजबूत हुई।
- फलतः जिन्ना के नेतृत्व में प्रसूत्रीय मांग प्रस्तुत की गयी और यहाँ से जिन्ना साम्प्रदायिक राजनीति की ओर उन्मुख हुए जो अंततः विभाजन के मार्ग चलने के समान था।
- कांग्रेस ने मुस्लिम साम्प्रदायिक वाद निपटने के लिए मुस्लिम समाज के विकास का कोई आर्थिक सामाजिक कार्यक्रम घोषित नहीं किया बल्कि नेताओं के स्तर पर ही वार्ता के माध्यम से समाधान का प्रयास किया गया ।
- इसी क्रम में जिन्ना को मुस्लिम सम्प्रदाय के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में मान्यता प्रदान कर दी। इस तरह कांग्रेस ने उच्चवर्गीय चरित्र से,साम्प्रदायिकता का समाधान करना चाहा जिसका परिणाम विभाजन के रूप में सामने आया।

बिहार का इतिहास

अध्याय – I

बिहार : एक परिचय

बिहार का संक्षिप्त परिचय :-

बिहार भारत के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक राज्य है और इसकी राजधानी पटना है। यह जनसंख्या की दृष्टि से भारत का तीसरा सबसे बड़ा प्रदेश है जबकि क्षेत्रफल की दृष्टि से बारहवां (12) है। 15 नवम्बर, सन् 2000 ई. को बिहार के दक्षिणी हिस्से को अलग कर एक नया राज्य झारखण्ड बनाया गया। बिहार के उत्तर में नेपाल, दक्षिण में झारखण्ड, पूर्व में पश्चिम बंगाल, और पश्चिम में उत्तर प्रदेश स्थित है। यह क्षेत्र गंगा नदी तथा उसकी सहायक नदियों के उपजाऊ मैदानों में बसा है। गंगा इसमें पश्चिम से पूर्व की तरफ बहती है।

बिहार की अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण है और 11.3 प्रतिशत लोग नगरों में रहते हैं। इसके अलावा बिहार के 46% लोग 25 वर्ष से कम आयु के हैं।

प्राचीन काल में बिहार विशाल साम्राज्यों, शिक्षा केन्द्रों एवं संस्कृति का गढ़ था। 'बिहार', 'विहार' (बौद्ध सन्यासियों के ठहरने के स्थान) शब्द का अपभ्रंश है। 12 फरवरी 1948 में महात्मा गांधी के अस्थि कलश जिन 12 तटों पर विसर्जित किए गए थे, त्रिमोहिनी संगम भी उनमें से एक है।

हिंदी, बिहार की राजभाषा और उर्दू द्वितीय राजभाषा है। मैथिली भारतीय संविधान के अष्टम अनुसूची में सम्मिलित एकमात्र बिहारी भाषा है। भोजपुरी, मगही, अंगिका तथा बज्जिका बिहार में बोली जाने वाली अन्य प्रमुख भाषाओं और बोलियों में सम्मिलित हैं। प्रमुख पर्वों में छठ, होली, दीपावली, दशहरा, महाशिवरात्रि, नागपंचमी, श्री पंचमी, मुहर्रम, ईद, तथा क्रिसमस हैं। सिक्खों के दसवें गुरु गोविन्द सिंह जी का जन्म स्थान होने के कारण पटना सिटी (पटना) में उनकी जयन्ती पर भी भारी श्रद्धार्पण देखने को मिलता है। बिहार ने हिंदी को सबसे पहले राज्य की अधिकारिक भाषा माना है।

(क) बिहार की "ऐतिहासिक पृष्ठभूमि"

बिहार का अतीत अत्यंत समृद्ध और गौरवशाली रहा है। वर्तमान बिहार विभिन्न एतिहासिक क्षेत्रों से मिलकर बना है। बिहार के क्षेत्र जैसे-मगध, मिथिला और अंग- धार्मिक ग्रंथों और प्राचीन भारत के महाकाव्यों में वर्णित हैं।

दक्षिण बिहार में पटना तथा गया जिलों का क्षेत्र प्राचीन काल में मगध कहलाता था। यह प्रदेश उत्तर में गंगा नदी, पूर्व में चम्पा नदी, पश्चिम में सोन नदी और दक्षिण में विन्ध्य की पहाड़ियों से घिरा हुआ था। किन्तु यह मगध नाम बाद का है। इसके पहले यह प्रदेश कीकट के नाम से जाना जाता था, जो अनार्यों का निवास समझा जाता था। ऋग्वेद में प्रेमगन्ध नामक राजा के अधीन कीकट देश का उल्लेख हुआ है। यास्क के निरुक्त में कीकट को अनार्य निवास और पुराणों में पाप भूमि बतलाया गया है। इस प्रदेश के लिए मगध नाम का सर्वप्रथम उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है। इस वेद की ब्रात्य ऋचा में मगध को ब्रात्य सभ्यता का केन्द्र कहा गया है। ब्रात्य मूलतः आर्य थे किन्तु आर्य संस्कृति की परिधि से बाहर रहने के कारण इन्हें संस्कार भ्रष्ट समझा जाता था। आर्यों के प्रारम्भिक काल में ही ये परिब्राजकों की तरह आर्य संस्कृति का पुनीत संदेश लेकर दूरस्थ मगध प्रान्त में अधिवसित हुए थे ।

मगध पर शासन करने वाला प्राचीनतम ज्ञात राजवंश बृहद्रथ वंश था। चेदिराजा के पुत्र बृहद्रथ ने गिरिब्रज को राजधानी बनाकर मगध में अपना स्वतंत्र राज्य वसु स्थापित किया था। बृहद्रथ का पुत्र जरासंघ महापराक्रमी था। जरासंघ ने मगध राज्य को बड़ा महत्त्वपूर्ण बना दिया था। इसका साम्राज्य पश्चिम में मथुरा और पूर्व में कलिंग, बंग और पुंड्र तक विस्तृत था। इसने बहुत से राजाओं को कैद कर रखा था। उसके अत्याचारों से तंग आकर कृष्ण वासुदेव की प्रेरणा से पाण्डु पुत्र भीम ने मल्ल युद्ध में जरासंघ का वध कर दिया। जरासंघ की मृत्यु के बाद उसका पुत्र वासुदेव मगध का राजा बना। इस वंश का अन्तिम राजा रिपुंजय था, जिसकी हत्या उसके मंत्री पुलिक ने करवा दी और अपने पुत्र को मगध के राजसिंहासन पर बैठा दिया। भातिय नामक एक महत्त्वाकांक्षी अधिकारी ने पुलिक पुत्र की हत्या कर अपने पुत्र बिम्बिसार को मगध का राजा बनाया। बिम्बिसार के राजसिंहान पर आरूढ होने के साथ ही मगध के इतिहास को शुद्ध ऐतिहासिक आधारशिला प्राप्त हुई और मगध का उत्कर्ष प्रारम्भ हुआ।

- **<u>मगध साम्राज्य का उत्कर्ष</u>**

मगध साम्राज्य का उत्कर्ष भारतीय इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना है। इसका महत्त्व मुख्य रूप से दो कारणों से है-

- प्रथम, मगध ने ही भारतवर्ष को प्रथम साम्राज्य दिया तथा
- द्वितीय, इसने भारतीय इतिहास में एक ऐसे केन्द्र के रूप में कार्य किया जिसने भारतीय शासकों को साम्राज्यवादी नीति अपनाने के लिए उत्प्रेरित किया।

प्राचीन ग्रंथों में मगध का विवरण मिलता है जिनमें मगध को विभिन्न नामों यथा मगधपुरी, बिम्बिसारपुरी आदि के नाम से जाना जाता है। ई. पू. छठी शताब्दी के पूर्व मगध में बृहद्रथ वंश का शासन था और इसकी राजधानी गिरिब्रज या राजगृह थी। इस वंश के तत्वावधान में ही मगध की राजनीतिक सत्ता प्रतिष्ठित हुई। बृहद्रथ का पुत्र जरासंध इस वंश का एक शक्तिशाली शासक था। परन्तु मगध का वास्तविक उत्थान ई. पू. 544 से **हर्यक वंश** के शासक बिम्बिसार के शासन काल से ही प्रारम्भ होता है। बिम्बिसार ने नीति और शक्ति के बल पर मगध को साम्राज्य निर्माण के पथ पर अग्रसर कर दिया।

- **<u>हर्यक वंश</u>**

बिम्बिसार

बिम्बिसार का राज्याभिषेक 15 वर्ष की अवस्था में 544 ई. पू. में हुआ था। वह एक सामान्य सामन्त भातिय का पुत्र था । बिम्बिसार न केवल महत्त्वाकांक्षी था वरन् एक अच्छा कूटनीतिज्ञ, दूरदर्शी, व्यवहारकुशल प्रशासक और साम्राज्यवादी शासक भी था। उसके राज्यारोहण के समय उत्तर भारत में तीन अन्य शक्तियाँ- कोशल, वत्स और अवन्ति थी। अपनी शक्ति को सुदृढ़ करने के लिए उसने तत्कालीन शक्तिशाली राज्यों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने की नीति का अवलम्बन किया। कोशल मगध का एक शक्तिशाली पड़ोसी राज्य था। बिम्बिसार ने कोशल नरेश प्रसेनजित की बहन कोशल देवी से विवाह कर लिया। इस विवाह से कोशल राज्य से इसके मधुर सम्बन्ध बन गये और दहेज के रूप में 1 लाख की वार्षिक आय वाला काशी का प्रान्त भी मिल गया । वैशाली के लिच्छवी राजा चेटक की पुत्री चेलना से विवाह कर इसने लिच्छवियों की मित्रता भी प्राप्त कर ली। लिच्छवी राज्य इस समय के सर्वाधिक शक्तिशाली गणराज्यों में से एक था। बिम्बिसार ने तीसरा विवाह मद्र देश की राजकुमारी क्षेमा के साथ किया। इस वैवाहिक सम्बन्ध के बाद मगध के प्रभाव क्षेत्र में और विस्तार हो गया। अवन्ति के शक्शिाली शासक चण्डमहासेन प्रद्योत की बीमारी के अवसर पर उसके इलाज के लिए अपने राजवैद्य जीवक को भेजकर बिम्बिसार ने सफल कूटनीतिज्ञ होने का प्रमाण प्रस्तुत किया।

मगध में बिम्बिसार के द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्य :

- इन वैवाहिक सम्बन्धों और शक्शिाली पड़ोसी राज्यों की सद्भावना के कारण मगध की शक्ति में काफी वृद्धि हुई

- इसके शासनकाल में प्रसिद्ध तिब्बती यात्री धर्मस्वामी मिथिला आया था। उसने पाटा नामक नगर का उल्लेख किया है जो संभवतः सिमराँवगढ़ था ।

शक्तिसिंह

रामसिंह देव के बाद उसका पुत्र शक्तिसिंह देव मिथिला का शासक बना। उसे शक्रसिंह देव के नाम से भी जाना जाता था। शक्तिसिंह देव ने बंगाल के सुल्तान कैक्कास के आक्रमण से मिथिला की रक्षा के लिए दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी का साथ देना शुरू किया। उसने रणथम्भौर के चौहान शासक हम्मीरदेव के विरुद्ध अलाउद्दीन की मदद की थी। शक्तिसिंह देव एक निरंकुश एवं स्वेच्छाचारी शासक था।

हरिसिंह

14वीं शताब्दी की शुरुआत में शक्तिसिंह देव का पुत्र हरिसिंह देव मिथिला का शासक बना। वह कर्णाट वंश का अन्तिम महान शासक था। उसे कर्णाट वंशोद्भव शत्रुजेता हरिसिंह देव महाराज कहा जाता था। उसका शासनकाल की राजनीतिक गतिविधियों से परिपूर्ण था।

- राजनीति रत्नाकर के रचयिता चण्डेश्वर ठाकुर, मैथिली की प्रथम पुस्तक वर्ण रत्नाकर के रचनाकार ज्योतिरीश्वर ठाकुर, देवादित्य, वीरेश्वर आदि उसके दरबार के रत्न थे।

सूर्यकर ठाकुर की सहायता से हरिसिंह देव ने मिथिला में कुलीन प्रथा को एक निश्चित स्वरूप प्रदान किया। कुलीन प्रथा में प्रत्येक जाति को गोत्र और कुल के अनुसार श्रेष्ठता के क्रम में पंजीकृत करने की प्रथा प्रचलित हुई। इसी के शासनकाल में मिथिला में पंजी व्यवस्था का जन्म हुआ और मिथिला का उच्च समाज कई उपवर्ण विभागों में विभक्त हो गया। स्मृति और निबंध-संबंधी रचनाएं भी इसी काल में बड़ी संख्या में लिखी गई और मिथिला समाज का जो रूप वर्तमान काल तक बना हुआ है, उसकी विशेषतायें इसी काल में परिपक्व रूप धारण कर सकी।

गयासुद्दीन तुगलक ने 1324 ई. में मिथिला पर आक्रमण किया। तुर्क सेना के आक्रमण को रोकने में विफल कर्णाट शासक हरिसिंह देव भागकर नेपाल की तराई में चला गया और मिथिला दिल्ली सल्तनत का एक हिस्सा बन गया। गयासुद्दीन तुगलक ने जिस क्षेत्र को तुगलक साम्राज्य में मिलाया, उसे **तुगलकपुर** का नया नाम दिया और अहमद नामक व्यक्ति को इस क्षेत्र के प्रशासन का उत्तरदायित्व सौंपा। यहाँ से निर्गत मुहम्मद बिन तुगलक का सिक्का आज भी उपलब्ध है। 14वीं सदी में फिरोज तुगलक ने यहाँ एक नये **वंश वॅनवार** वंश के शासन की शुरुआत की। इसी वंश के शासक शिवसिंह के दरबार में मैथिल कोकिल **विद्यापति** रहते थे, जिनकी प्रसिद्ध रचना **कीर्तिलता** है।

बिहार में तुर्क शासन

मध्यकाल में बिहार का प्राचीन गौरव लुप्त हो गया। इस काल में बिहार न तो भौगोलिक या भाषायी आधार पर ही परिभाषित था और न ही स्वतंत्र राज्य के रूप में ही इसका अस्तित्व था। फिर भी अन्य कालों की तरह इस समयावधि में भी इसका इतिहास महत्त्वपूर्ण था।

मध्यकाल में यह क्षेत्र राजनीतिक रूप से गंगा नदी द्वारा दो भागों में विभाजित था।

- गंगा के उत्तर स्थित अधिकांश भू-भाग पर मिथिला के कर्णाटवंशी शासकों का आधिपत्य था ।
- गंगा के दक्षिण में अनेक छोटे-छोटे राजा या सामन्त या तो अपनी-अपनी स्वतंत्रता की स्थापना कर चुके थे या अपनी स्वतंत्र सत्ता की स्थापना के लिए प्रयासरत थे।

बिहार में तुर्क सत्ता की स्थापना का वास्तविक श्रेय इख्ते बख्तियार खिलजी को जाता है । तुर्कों द्वारा इस प्रदेश पर विजय प्राप्त करने के बाद भी यह क्षेत्र विभाजित ही रहा परन्तु विहार राज्य नामकरण, इसकी भौगोलिक सीमाओं का निर्धारण और एक स्वतंत्र राज्य के रूप में इसका अस्तित्व मध्यकाल में ही दिखाई पड़ा। बिहार शब्द विहार का अपभ्रंश है। बख्तियार खिलजी द्वारा बिहार में मुस्लिम सत्ता की स्थापना के क्रम में नालन्दा विश्वविद्यालय के समीप स्थित उदन्तपुरी के दुर्ग जिसे मुस्लिम इतिहासकार **मिन्हाज उल शिराज** ने **हिसार ए बिहार** कहा है, पर विजय प्राप्त कर इसके आसपास के इलाकों पर अधिकार करने के पश्चात् यह पूरा इलाका बिहार के नाम से जाना जाने लगा।

मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी बिहार सहित सम्पूर्ण पूर्वी भारत में तुर्क सत्ता का संस्थापक था । बख्तियार खिलजी **मुहम्मद गोरी** के साथ भारत आया था। 1107 ई. में अवध के सूबेदार मलिक **हिसामुद्दीन** अधुलबक ने इसे आधुनिक मिर्जापुर के पूर्वी भाग में गंगा और कर्मनाशा के बीच के क्षेत्र में स्थित भुली और भागवत परगने की जागीर दी। इन जागीरों के प्राप्त आमदनी से उसने एक सुसंगठित सेना का गठन किया और कर्मनाशा नदी को पार कर मनेर और मगध के क्षेत्रों पर आक्रमण किया। इन आक्रमणों से उसे काफी धन एवं संसाधन प्राप्त हुआ। उसकी सफलताओं से प्रभावित होकर **कुतुबुद्दीन ऐबक** ने उसे सम्मानसूचक प्रतीक भेजा और अन्य स्थानों पर आक्रमण की भी अनुमति दे दी। इससे बख्तियार खिलजी का हौसला बुलन्द हो गया और 1199 ई. में उसने **हिसार-ए-बिहार** पर आक्रमण कर दिया। पाल शासक **इन्द्रद्युम्नपाल** इस गढ़ की रक्षा करने में असमर्थ रहा। इसी **आक्रमण के क्रम में**

के कलकत्ता अधिवेशन में बिहार के 31 प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

- 1887 के कांग्रेस के मद्रास अधिवेशन में बिहार के दो प्रतिनिधियों शालिग्राम सिंह और गुरु प्रसाद सेन ने बहस में भाग लिया।
  - शालिग्राम सिंह ने सैन्य सेवा प्रस्ताव के समर्थन में भाषण दिया और गुरु प्रसाद सेन ने लोक व्यय पर एक प्रस्ताव पेश किया।

  तब से बिहार के अधिक से अधिक प्रतिनिधि कांग्रेस के अधिवेशनों में जाने लगे और धीरे-धीरे ब्रिटिश विरोधी आन्दोलनों का माहौल तैयार होने लगा।
- 1908 ई. के कांग्रेस के मद्रास अधिवेशन में बिहार के हसन इमाम, भारतीय कांग्रेस कमिटी के सदस्य के रूप में सम्मिलित हुए।
- 1914 ई. में ब्रिटिश सरकार से संवैधानिक सुधार की समस्या पर बात करने के लिए इंग्लैण्ड गये सात सदस्यीय भारतीय प्रतिनिधिमण्डल में **दो बिहारी मजहरूल हक और सच्चिदानन्द सिन्हा** भी सम्मिलित थे।
- ब्रिटिश शासन के विरुद्ध **भारत में सत्याग्रह का पहला व्यापक प्रयोग महात्मा गाँधी ने 1917 ई. में बिहार के चम्पारण से ही शुरू किया।**
- तबसे 1947 ई. तक भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के सभी चरणों में बिहार का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

<u>बिहार प्रान्त की अलग माँग एवं पृथक राज्य का गठन</u>

मुगल साम्राज्य के पतन के पश्चात बिहार, बंगाल के नवाब के हाथों चला गया। ब्रिटिश शासन के दौर में भी यह बंगाल का एक उपांग बना रहा। पाश्चात्य शिक्षा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाकर बंगालियों ने बिहार के प्रशासन और शिक्षा पर अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया। इससे बिहारी अपनी निरीहता के प्रति चिन्तित होने लगे और उनके मन में बंगाल से अलग होने की बात घर करती चली गयी।

अंग्रेजी शिक्षा से युक्त चन्द मुस्लिम और कायस्थ बुद्धिजीवियों के अभ्युदय के साथ बंगाल से बिहार को अलग करने का विचार प्रकट होने लगा। 7 फरवरी 1876 ई. को मुंगेर से प्रकाशित होने वाले एक पत्र 'मुर्ध ए सुलेमान' में पहली बार बिहार बिहारियों के लिए का नारा बुलन्द किया गया। इसके द्वारा बिहार में सरकारी नौकरियों में बंगालियों के स्थान पर बिहारियों की नियुक्ति की माँग की गयी। अगले ही वर्ष उर्दू पत्र कसीद ने 22 जनवरी 1877 ई. को बिहार को बंगाल से अलग करने की जोरदार वकालत की।

- 19वीं शताब्दी के अन्तिम दशक में बिहार के शिक्षित वर्गों द्वारा एक अलग प्रान्त के रूप में बिहार की माँग जोरदार तरीके से की जाने लगी।
- पृथक बिहार प्रान्त आन्दोलन को शुरू करने का श्रेय **सच्चिदानन्द सिन्हा और महेश नारायण** को दिया जाता है। 1889 से 1893 के अपने ब्रिटेन प्रवास और बैरिस्टरी पास कर ब्रिटेन से भारत वापस लौटने के क्रम में हुए कटु अनुभवों ने सच्चिदानन्द सिन्हा को उद्वेलित कर दिया और उन्होंने बिहार को एक स्वतंत्र प्रान्त का दर्जा दिलाने का संकल्प ले लिया। उन्होंने पटना के एक पत्रकार महेश नारायण जो कायस्थ गजट के सम्पादक थे, से इस संदर्भ में विचार-विमर्श किया। महेश नारायण भी बिहारियों के सामाजिक और राजनीतिक जागरण के लिए बिहार को बंगाल से अलग करने के विचार के समर्थक थे । इन दोनों ने नन्दकिशोर लाल और कृष्णा सहाय के सहयोग से आन्दोलन को गति प्रदान करने के लिए जनवरी 1894 में **बिहार टाइम्स** नामक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया। महेश नारायण को इसका सम्पादक बनाया गया।
- **बिहार टाइम्स** का प्रकाशन शुरू होते ही बिहार पृथक्करण आन्दोलन की गति तीव्र हो गयी। इस पत्र ने लोगों के हृदय में आत्म सम्मान और स्वाभिमान की भावना पैदा की और उनसे आग्रह किया कि वे पृथक बिहार के निर्माण के लिए चलाये जा रहे आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभायें।
- वर्ष 1894 में ही बिहार के उपराज्यपाल सर **चार्ल्स इलियट** को बंगाल से बिहार को अलग करने सम्बन्धी एक प्रस्ताव दिया गया, मगर इस प्रस्ताव को सरकार द्वारा अस्वीकार कर दिया गया। बंगाल से बिहार को अलग करने की माँग को लगभग एक दशक बाद एक नई दिशा मिली।
- 3 दिसम्बर 1903 ई. को गृह विभाग के सचिव **हरबर्ट रिजले** के हस्ताक्षर से असम के मुख्य आयुक्त विलियम वार्ड का यह प्रस्ताव कि प्रशासनिक सुविधा के दृष्टिकोण से बंगाल का **चटगाँव मण्डल** और ढाका और मेमन सिंह जिला को असम में मिला दिया जाय, एक सरकारी प्रस्ताव के रूप में प्रकाशित हुआ। बिहार के समाचार पत्रों ने इस प्रस्ताव को अव्यवहारिक कहा और प्रशासनिक दृष्टिकोण से बिहार को बंगाल से अलग करने का सुझाव दिया।
- सच्चिदानन्द सिन्हा ने फरवरी 1904 के हिन्दुस्तान, रिव्यू में एक लेख **'दि पार्टिशन ऑफ द लोअर प्रोविन्सेजः एन अल्टरनेटिभ प्रपोजल'** लिखकर बिहार के बंगाल से पृथक्करण पर जोर दिया।

महेश नारायण ने भी अगस्त 1905 के हिन्दुस्तान रिव्यू में इसी प्रकार का विचार व्यक्त करते हुए एक लेख लिखा। इन दोनों लेखों को मिलाकर जनवरी **1906 ई. में एक पुस्तक प्रकाशित की गई जिसका नाम था 'पार्टिशन ऑफ बंगाल और सेपरेशन ऑफ बिहार'।** इस पुस्तक का बिहारवासियों ने जबर्दस्त स्वागत किया। कलकत्ता में पढ़ रहे बिहारी छात्रों में इस पुस्तक ने अपूर्व उत्साह पैदा किया।

- राजेन्द्र प्रसाद कलकत्ता के बिहारी क्लब के सचिव थे। उनके प्रयास से 1906 के दशहरा में बैरिस्टर शफुद्दीन के सभापतित्व में पटना कॉलेज पटना में पहले बिहारी छात्र सम्मेलन का आयोजन हुआ। इस सम्मेलन में बिहार के सभी विद्यालयों और महाविद्यालयों के छात्र सम्मिलित हुए। इस **सम्मेलन ने बिहार में एक नया जागरण पैदा कर दिया** और सच्चिदानन्द सिन्हा और महेश नारायण का सपना ठोस रूप लेने लगा ।
- जुलाई 1906 ई. में **बिहार टाइम्स का नाम बदलकर बिहारी** रख दिया गया। महेश नारायण इसके सम्पादक बने रहे लेकिन सच्चिदानंद सिन्हा ने इसका आर्थिक उत्तरदायित्व ग्रहण कर लिया।
- 1907 ई. में पहली बार एक बिहारी फखरुद्दीन को कलकत्ता उच्च न्यायालय का न्यायाधीश नियुक्त किया गया।
- अगस्त 1907 में महेश नारायण की मृत्यु हो गयी किन्तु उनके देहान्त के बाद सच्चिदानन्द सिन्हा ने हार नहीं मानी। उन्हें मजहरूल हक, अली इमाम हसन इमाम, मुहम्मद फखरुद्दीन आदि बिहारी मुसलमानों का सक्रिय सहयोग मिल गया। 1908 ई. में इन नेताओं के प्रयास से **बिहार प्रादेशिक सम्मेलन** की स्थापना हुई। इसका पहला **अधिवेशन अली इमाम की अध्यक्षता में पटना में 12 और 13 अप्रैल 1908 को आयोजित हुआ। इस अधिवेशन में मुहम्मद फखरुद्दीन ने बंगाल से बिहार को अलग करने का प्रस्ताव रखा जो सर्वसम्मति से पारित हुआ।**
- 1908 में ही सोनपुर मेले में सच्चिदानन्द सिन्हा ने मजहरूल हक, हसन इमाम और दीपनारायण सिंह के सहयोग से बिहार के कांग्रेसियों की एक सभा बुलाई। **नबाब सरफराज हुसैन** की अध्यक्षता में अयोजित इस सभा में **बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी का गठन** किया गया जिसके अध्यक्ष **हसन इमाम** बनाये गये। इसी वर्ष **अली इमाम को कलकत्ता उच्च न्यायालय में भारत सरकार के स्थायी विधि परामर्शदाता** के पद पर नियुक्त किया गया था। इस पद पर नियुक्त होने वाले के **पहले बिहारी** थे।

  - सच्चिदानन्द सिन्हा ने सरकार के इस कदम का स्वागत किया और आग्रह किया कि बिहार को अलग प्रान्त बनाकर बिहारियों के मान-सम्मान की रक्षा करें।
- मार्ले मिन्टों सुधार अधिनियम के तहत हुए **1910 के चुनाव में सच्चिदानन्द सिन्हा बंगाल विधान परिषद् की ओर से केन्द्रीय विधान परिषद् के सदस्य निर्वाचित** हुए।
  - इसी चुनाव में मजहरूल हक भी मुसलमानों के प्रतिनिधि के रूप में निर्वाचित हुए थे। केन्द्रीय विधान परिषद् का सदस्य बनते ही सच्चिदानन्द सिन्हा ने सरकारी अधिकारियों को बिहार को बंगाल से अलग कर एक नया प्रान्त बनाने की दिशा में प्रभावित करना शुरु किया।
  - इन्हीं के प्रस्ताव पर वायसराय लार्ड मिन्टो ने 1910 में ही **अली इमाम को गवर्नर जनरल की कार्यकारिणी परिषद में विधि सदस्य** के पद पर नियुक्त किया। शुरु में अली इमाम इस पद को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे, पर सच्चिदानन्द सिन्हा द्वारा यह समझाने पर कि इस पद को स्वीकार कर लेने पृथक बिहार राज्य के निर्माण आन्दोलन को बल मिलेगा, वे राजी हो गये।
  - विधि सदस्य बन जाने के बाद भी सर अली इमाम को पृथक बिहार प्रान्त के गठन का पूरा यकीन नहीं था। वे सच्चिदानन्द सिन्हा को स्वप्नद्रष्टय मानते थे फिर भी उन्होंने गवर्नर जनरल को यह सलाह दी कि लार्ड कर्जन द्वारा किया गया बंगाल विभाजन व्यवहारिक नहीं था, इसलिए उसे वापस लेकर इसके स्थान पर बिहार और उड़ीसा को बंगाल से अलग कर उसे स्वतंत्र प्रान्त का दर्जा देना अधिक व्यवहारिक होगा। गवर्नर जनरल को अपने सदस्य की बात तर्कसंगत लगी।
- **फिर 12 दिसम्बर 1911 को दिल्ली में आयोजित शाही दरबार में बंगाल विभाजन को रद्द करने की घोषणा की गयी और सम्राट जॉर्ज पंचम ने बंगाल से अलग बिहार एवं उड़ीसा को मिलाकर एक नये प्रान्त बिहार के गठन की घोषणा की।**
- **बिहार को सपरिषद् उपराज्यपाल का लाभ मिला। 1 अप्रैल 1912 को नये राज्य बिहार का विधिवत उद्घाटन हुआ और पटना बिहार की राजधानी बनी।** बिहार अब अपनी पृथक पहचान के साथ राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय हो उठा।

<u>बिहार में क्रांतिकारी आतंकवाद</u>

- **बंग भंग एवं स्वदेशी आन्दोलन ने भारत में क्रान्तिकारी आतंकवाद को जन्म दिया।** बंगाल का अंग होते हुए भी बिहार इससे अछूता नहीं रहा। **बिहार**

में डॉ. ज्ञानेन्द्रनाथ मित्र, बाबाजी ठाकुर दास और केदारनाथ बनर्जी इस आन्दोलन के प्रतिष्ठापक थे।

- **ज्ञानेन्द्रनाथ** बाँकीपुर में चिकित्सक थे। उन्होंने डॉक्टरी पेशा छोड़कर स्वयं को क्रान्तिकारियों के साथ सम्बद्ध कर लिया और अब उनका नाम **स्वामी ब्रह्मानन्द** हो गया।
- **बाबाजी ठाकुर दास** गया के निवासी थे। उन्होंने 1906-07 में पटना में **रामकृष्ण सोसायटी की स्थापना** की थी और एक समाचार पत्र द **मदरलैण्ड का प्रकाशन** और सम्पादन भी शुरू किया। इस पत्र द्वारा क्रान्तिकारी विचारों का प्रचार-प्रसार शुरू हुआ।
- शीघ्र ही इन दोनों नेताओं का सम्पर्क बंगाल के क्रान्तिकारियों के साथ स्थापित हो गया। केदारनाथ बनर्जी इन दोनों के मित्र थे। इन सभी के प्रयास से हेमांगिनी देवी, वारिन्द्र घोष, कृष्णाधान घोष आदि ने क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेना शुरू किया।

- **30 अप्रैल 1908 को खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी नामक दो नवयुवकों ने मुजफ्फरपुर के जिला जज डी. एच. किंग्सफोर्ड की हत्या के लिए बम विस्फोट किया।** सौभाग्य से किंग्सफोर्ड बच गया और फिटन पर सवार मुजफ्फरपुर के प्रसिद्ध वकील प्रिंगले केनेडी की बेटी और पत्नी की बम बिस्फोट में मृत्यु हो गयी।
  - **खुदीराम बोस** और प्रफुल्ल चाकी भाग निकले लेकिन मई 1908 को ही खुदीराम बोस को पूसा रोड स्टेशन के पास से गिरफ्तार कर लिया गया। उस पर मुजफ्फरपुर में मुकदमा चला और 11 अगस्त 1908 को खुदीराम बोस को फाँसी दे दी गयी ।
  - **प्रफुल्ल चाकी** ने गिरफ्तारी से बचने के लिए 2 मई 1908 को आत्म हत्या कर ली।
  - इस समय **देवघर और राँची** भी क्रान्तिकारी गतिविधियों के केन्द्र बने हुए थे। देवघर में सील नामक एक अधबने मकान को क्रान्तिकारियों के प्रशिक्षण और बम बनाने के उद्देश्य से किराये पर लिया गया था।
  - **गोशचन्द्र घोष** राँची में क्रांतिकारियों का नेता था। 1913 में क्रान्तिकारियों ने तत्कालीन शाहाबाद जिले के निमेज गाँव में स्थित मठ के महन्थ भगवान दास की हत्या कर दी।

- **मुजफ्फरपुर बम काण्ड ने बिहार के नवयुवकों में नये उत्साह का संचार कर दिया।** यहाँ अनुशीलन समिति की गतिविधियाँ बढ़ गई। **1913 ई. में शचीन्द्र नाथ सान्याल ने पटना में अनुशीलन समिति की एक शाखा स्थापित की।** उन्होंने यहाँ पर स्कूल और कॉलेज के विद्यार्थियों को अपने दल में भर्ती करना शुरू कर दिया। छात्रों मुख्यतः बी. एन. कॉलेज, पटना और टी. के. घोष अकादमी, पटना के विद्यार्थी सम्मिलित थे। इस समय **बैंकिमचन्द्र मित्र, अखिलचन्द्र दास गुप्ता, रघुवीर सिंह** आदि विद्यार्थियों ने क्रान्तिकारी गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता निभाई। ढाका अनुशीलन समिति के नेताओं ने भी बिहार में अपनी सक्रियता बढ़ा दी। रेवती नाग, फणिभूषण भट्टाचार्य और नलिनी बागची ने भागलपुर को अपनी गतिविधियों का केन्द्र बनाया तथा यदुनाथ सरकार ने बक्सर में युवा क्रान्तिकारियों को प्रशिक्षण देने की व्यवस्था की। मनोरंजन गृह ठाकुरता, सरयुग प्रसाद, हेमेन्द्रनाथ घोष, चुनचुन पाण्डेय, श्यामा प्रसाद, बटेश्वर पाण्डेय, रामानन्द प्रसाद चौधरी, अनिरुद्ध प्रसाद, छोटन सिंह, राम बिनोद सिंह सहित अनेक युवकों ने बिहार के विभिन्न भागों में क्रान्तिकारी गतिविधियों का संचालन किया।
- अपने प्रारम्भिक दौर में बिहार में क्रांतिकारी आतंकवाद जनसाधारण के बीच लोकप्रिय नहीं हो सका, फिर भी इन क्रांतिकारियों का परिश्रम और त्याग बेकार नहीं गया और इसने बिहार में राजनीतिक गतिविधियों को तीव्रता प्रदान की।

<u>बिहार में होमरूल आन्दोलन-1916</u>

1916 ई. में भारत में होमरूल आन्दोलन की शुरुआत हुई। बाल **गंगाधर तिलक के नेतृत्व में अप्रैल 1916 में पूना और श्रीमती ऐनी बेसेन्ट के नेतृत्व में सितम्बर 1916 में मद्रास में होमरूल लीग की स्थापना हुई।** इसका प्रभाव बिहार पर भी पड़ा और यहाँ भी होमरूल आन्दोलन की गतिविधियाँ आरम्भ हो गयी।

- नवम्बर 1916 में भारत को स्वशासन का अधिकार देने के लिए केन्द्रीय विधान परिषद् के 19 निर्वाचित सदस्यों ने वायसराय को एक ज्ञापन दिया। ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने वालों में बिहार से निर्वाचित प्रतिनिधि **मजहरूल हक** भी सम्मिलित थे। 16 दिसम्बर 1916 को बिहार में होमरूल लीग की शाखा स्थापित करने की आवश्यकता पर विचार-विमर्श करने के लिए मजहरूल हक की अध्यक्षता में पटना में एक सभा का आयोजन किया गया। अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में मजहरूल हक ने कहा कि अन्य प्रान्तों की तरह बिहार में भी होमरूल लीग की स्थापना अति आवश्यक है क्योंकि इसके बिना स्वराज्य का लक्ष्य प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है।
  - होमरूल लीग के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए आगे **मजहरूल हक** ने कहा कि इसका उद्देश्य **जनता को स्वशासन के मामले में प्रशिक्षित कर कोने-कोने में स्वराज्य के महत्व का प्रचार करना है।**
  - इसी सभा में **बिहार में होमरूल लीग की स्थापना की गई जिसके अध्यक्ष मजहरूल हक बने।** खाँ बहादुर सरफराज हुसैन खाँ और राय बहादुर पूर्णेन्दु नारायण सिन्हा को उपाध्यक्ष और चन्द्रवंशी सहाय तथा बैद्यनाथ नारायण सिंह को सचिव बनाया गया।

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्तूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)

SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
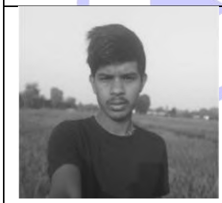	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
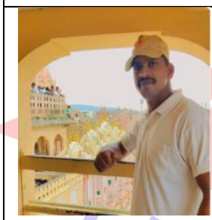	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota

And many others……

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – https://wa.link/001xtz

Online order करें – https://shorturl.at/sxD46

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE